Chapter-1

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY University of Baroda

प्रथम अध्याय

डॉ. सूर्यदीन यादव का व्यक्तित्त्व एवं कृतित्व

द्वितीय अध्याय (२) आधुनिक हिन्दी कहानी, और डॉक्टर सूर्यदीन यादव

तृतीय अध्याय (३) डॉक्टर सूर्यदीन यादव का कहानी साहित्य : तात्त्विक विवेचन

चतुर्थ अध्याय (४) डॉक्टर सूर्यदीन यादव की कहानियों का कथ्य एवं शिल्प : विशिष्ट आयाम

पंचम अध्याय (५) डॉक्टर सूर्यदीन यादव के उपन्यासों की कथावस्तु एवं उपन्यासों का तात्त्विक विवेचन

(६) उपसंहार

डॉ. सूर्यदीन यादव : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

सूर्यदीन यादव आधुनिक समकालीन गुजरात के कहानीकारो में प्रमुख कहानीकार है । उनका सर्जनात्मक व्यक्तित्व बहु आयामी है । समकालीन कथा और उपन्यास साहित्य में मानव जीवन की आंतरिक स्थितियों तथा परिवेश भूमि का चित्रण करने में यादव जी बेजोड़ है । आँचलिक कथाकार के माध्यम से उन्होंने आधुनिक युग के विसंवादी जीवन, दलित जीवन व ग्रामीण चित्रण-विश्लेषण किया है । विशेष रूप से ग्रामीण समस्याएँ सामाजिक जीवन बेरोजगारी के लिए वतन छोड़कर शहर की तरफ भागना ममता के परिवारिक त्याग के कई अनछुए पहलुओ के यथार्थ चित्रण ने उनको हिन्दी साहित्य में अग्रगण्य स्थान दिलाया है । यादव जी का जीवन इस रूप में भी उल्लेखनीय है कि जीवन और महत्वाकांक्षा के उच्चतर शिखरों को प्राप्त करके भी वे उन प्रश्नो से उसी तीव्रता से संघर्ष करते दिखाई देते है । जो अब तक अनुत्तरित बने हुए है । और चाहे जीवन हो या भौतिक सुख-सुविधाएँ रचना कर्म के प्रति उनका वही लगाव और आकर्षण बना हुआ है जो की उनके रचनाकार जीवन को आरम्भ करते समय था ।

डॉ. सूर्यदीन यादव के व्यक्तित्त्व का रेखांकन

भारत के उत्तर प्रदेश राज्य में मर्यादा पुरूषोत्तम राम और श्रीकृष्ण के जन्म भूमि उत्तर-प्रदेश राज्य के सुल्तानपुर जिले में शहर से कुछ मील दूरी पर 'ढाहा' नामक गाँव में डॉ. सूर्यदीन यादव जी का जन्म १५ जुलाई सन् १९५२ को भाद्रपद शुक्लपक्ष द्वादशी रविवार के दिन हुआ था । पिता श्री रघुनाथ यादव किसान थे तथा माता श्री धानपाती देवी उनके कृषक कार्य मे हाथ बटाया करती थी । इनके पिता जी तीन भाई थे । मोतीलाल यादव, रघुनाथ यादव एवं रघुनंदन यादव । गयाप्रसाद के एक छोटे भाई बनवारी को भी (पिता शिवलाल की मृत्यु के बाद) जयलाल गोद लिया था जिससे सूर्यदीन के पिता रघुनाथ सहित कुल चार भाई हुए ।

रघुनाथ के दो पुत्र :

रामरूप यादव एवं सूर्यदीन यादव । सूर्यदीन यादव के पिता जयलाल एक साधारण किसान थे । किन्तु अल्हड़ व्यक्ति थे घूमने के शौकीन थे । परिवार बड़ा था । दूर-दूर तक रिश्तेदारियाँ थी । दादा जयलाल रिश्तेदारियों में आया जाया करते थे । वह समाज के साथ जुड़े रहते थे । इसलिए खेती-बाड़ी अन्य भाइयो एवं सदस्यो पर निर्भर होती थी । जयलाल कुछ समय तक ढाहा गाँव के मौजा हसनपुर के राजा के राजमहल में चौकीदार थे । किन्तु उन्हें बंधन ओर गुलामी रास न आई तो चौकीदारी छोड़कर समाज के साथ अटूट रूप से जुड़कर चौधरीपन करते थे । बालक सूर्यदीन का अधिकांश बचपन

दादी के साथ व्यतीत हुआ । इसलिए उन्हें अपनी माता और दादी (बड़ी माता) का दुहरा वात्सल्य प्राप्त हुआ । बड़े भाई मोतीलाल जब अहमदाबाद मिल में नौकरी करने लगे सूर्यदीन के पिता रघुनाथ के कंधो पर घर-परिवार और खेती का दायित्व आ पड़ा था । पिता रघुनाथ पाँचवीं कक्षा तक ही शिक्षा प्राप्त कर पाये थे किन्तु पुत्र को काफी पढाना चाहते थे । पिता रघुनाथ बहुत कर्मठ और परिश्रमी हिम्मतवान किसान थे । सूर्यदीन की माता धानपाती जब तीन वर्ष की बच्ची थी तभी उनकी मां (सूर्यदीन की नानी) का किसी बीमारी-वश देहान्त हो गया था । धानपाती अपने पिता ढाकू की इकलौती बेटी थी । धानपाती अपने चचेरे भाइओं के बीच रहकर बड़ी हुई थी । इसलिए बचपन से ही धानपाती कर्मठ एवं परिश्रमी थी । मां के गुण स्वभाव एवं कर्मठता बालक सूर्यदीन को प्राप्त हुए। सूर्यदीन की मां अनपढ़ होते हुए भी एक विदुषी थी । पिता रघुनाथ अधिक पढ़ाना चाहते थे किन्तु कंधे पर दायित्व आ जाने से प्रायमरी तक ही पढ़ पाये थे । सूर्यदीन की मां को भी पढ़ने की इच्छा थी पर बाल्यावस्था में मातृविहीन हो जाने से बालिका धानपाती पढ़ नहीं सकी थी और विशेष रूप से उस समय लड़कियों को पराया धन मानते थे। सूर्यदीन की माता पढ़ी कम गढी अधिक थी । वह एक असाधारण कर्मठ एवं वात्सल्यपूर्णविदुषी थी । सूर्यदीन यादव ने अपने संस्मरणात्मक विवेचना में लिखा भी है कि-"मेरी मां पढ़ी-लिखी नहीं थी पर विदुषी अवश्य थी ।"[१] दूसरी बात यह कि तमाम अभावों में पढ़ाई करना नाकों चने चबाने जैसा था । सूर्यदीन का प्रारम्भिक जीवन अर्थात् बचपन अभावों में बीता ।

सूर्यदीन के माता-पिता जब राजापुर मौजे के छोटे से पूरे गंगाराम नामक गांव में अपने ननिहाल में रहकर खेती बाड़ी सँभालने लगे तो बालक सूर्यदीन अपनी दादी के साथ रहते थे । सूर्यदीन के पितराई नाना-नानी नि:संतान थे । अत: उनके घर की सम्पति एवं सम्पूर्ण जायदाद सूर्यदीन के पिता रघुनाथ के नाम हो गई थी और पूरे गंगाराम में रहकर ही सूर्यदीन को शिक्षा का प्रारम्भ हुआ था । सूर्यदीन को बचपन से ही पढ़ने का शौक था । इनकी पढ़ाई के लिए इनके माता-पिता अभावों में ही हर सुविधा जुटाये रहते थे। सूर्यदीन की पढ़ाई बंद होने के कगार पर दिन दुगुनी, रात चौगनी परिश्रम करके सूर्यदीन यादव पांचवीं कक्षा प्रथम श्रेण में उत्तीर्ण हुए तो इनके माता-पिता का हौंसला दुगुना बढ़ गया। फिर तो पढ़ाई का सिलसिला तेजी से आगे बढ़ चला । सूर्यदीन की शिक्षा-दीक्षा में उनके प्राथमिक गुरुजनों की प्रारंभिक रचना और प्रेरक व्यक्तित्व डो. सूर्यदीन यादव जबरर्दस्त भूमिका रही है । पहली कक्षा के गुरु बजरंगीलाल श्रीवास्तव, गौरीशंकर श्रीवास्तव, रामबहोर शुकल, हरिबख्श सिंह गौतम सिंह, रामलखन पाल, राम उजागिर तिवारी, रामचन्द्र

सिंह, नरेन्द्र बहादुर सिंह, देवदत्त शर्मा, गंगादत्त तिवारी, दूधनाथ सिंह रामकृष्ण मिश्र, कृपानारायण शर्मा, सूरजप्रताप सिंह (प्राचार्य) की दी गई शिक्षा-दीक्षा सूर्यदीन यादव के लिए बहुत ही कारगर सिद्ध हुई ।

उच्च कक्षाओं के गुरुवर डॉ. त्रिभुवननाथ चौबे के.पी. श्रीवास्तव, डॉ. लाल बहादुर सिंह का सूर्यदीन की शिक्षा मे बहुत बड़ा योगदान रहा । उच्च शिक्षा के लिए सूर्यदीन को तनतोड़ महेनत एवं नाकों चने चबाने पड़े । राजापुर गांव से यंहां गनपत सहाय डिग्री कॉलेज में प्रवेश लिये तो रोज साइकिल द्वारा १५ मिल आना जाना पड़ता था । खेती का कार्य निपट जाने और पिता की स्वीकृति पाने के बाद ही सूर्यदीन कॉलेज में पढ़ने जा पाते थे । खेतों में खटने और पिता जी के कार्यो मे हाथ बटाना सूर्यदीन अपना धर्म मानते थे ।

उन्हीं दिनो सूर्यदीन का गौना आ गया था । घर में पत्नी के आ जाने से उनकी भी चिंता सूर्यदीन को लगी रहती थी । ऐसे में पढ़ाई करना उल्टा तैरने के समान था। पर सूर्यदीन की पढ़ाई में पत्नी की जबरदस्त भूमिका रही है । वह शायद प्रेम था, जो पत्नी के द्वारा एक शक्ति-प्रेरणा के रूप में उनका हौसला बढ़ाता था । बी.ए. की पढ़ाई पूर्ण करके सूर्यदीन ने एम.ए. की पढ़ाई के लिए अमेठी कॉलेज में फार्म भर दिया था। पर अभाव उन्हें कोसता रहता था । एक माह बाद एम.ए. की परीक्षा होनेवाली थी और सूर्यदीन के पास कोई पुस्तक ही नहीं थी । उस परीक्षा को तैयारी करने और किसी तरह परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए सूर्यदीन अपने मित्रो की सहायता से उनकी पुस्तकें मांगकर पढ़ते थे । कभी गुरुजनो के सान्निध्य में बैठकर प्रश्नों के उत्तर लिख देते। वैसे यह भी घर-खेती ओर पिता की सहायता से करते थे । पत्नी के आ जाने से उन्हें लगा की परीक्षा को पूरी तैयारी नहीं हो पा रही है । दरअसल सूर्यदीन फेल होना नहीं चाहते थे । अथक परिश्रम करके स्नातक डिग्री गनपत सहाय डिग्री कॉलेज सुल्तानपुर में गोरखपुर विश्वविद्यालय उत्तरप्रदेश में सन् १९७४ में उत्तीर्ण की पारिवारिक स्थिति खराब होने के कारण उन्हें रोजी-रोटी की तलाश थी । उन्हीं दिनो अहमदाबाद से उनके चाचा रघुनन्दन यादव आये हुए थे । चाचा जी उन्हें बहुत मानते थे । घर के लोग भी यही चाहते थे कि अब सूर्यदीन भी कुछ कमाये । अच्छा मौका देखकर सूर्यदीन यादव अपने चाचा के साथ बिना किसी को बताये ही अहमदाबाद चले आये । इस तरह से सूर्यदीन सन् १९७५ से गुजरात में रहने लगे । चाचा के साथ और भाई-बहनों के साथ सूर्यदीन ऐसे हिल-मिल गए कि गांव लौटने की इच्छा नहीं हुई । किन्तु बेकार बैठकर खाना सूर्यदीन को कोसता रहता । एक दिन चाचाजी को चोरी से सादरा गांव जहां वह रहते थे एक प्रेस में कंपोजिंग सीखने चले गये । इस तरह सूर्यदीन यादव घर में छोटे भाई-बहनों के साथ

गुजराती बोलते, लिखते, सीखते और प्रेस गुजराती में कंपोजिंग करते-करते गुजराती भाषा के जानकार हो गये । प्रेस में जाने से उनके चाचा नाराज होते थे । किन्तु वह अपने खाने भर के लिए प्रेस में कंपोजिंग करके माह में साठ रुपये ले आते थे । तीन-चार माह में सूर्य-दीन ने प्रेस का सारा काम कंपोजिंग सीख लिया । उन्हीं दिनों चाचा के परम मित्र दहेगाम कॉलेज के आचार्य श्री रघुनाथ भट्ट को पहचान से सूर्यदीन को विवेकानंद कॉलेज, अहमदाबाद मे बी.एड करने के लिए प्रवेश मिल गया । इस तरह सूर्यदीन ने सन् १९७७ में गुजरात युनिवर्सिटी से संलग्न बी.एड कॉलेज विवेकानन्द कॉलेज से बी.एड की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली । गुजरात युनिवर्सिटी से सन, १९७९ में सूर्यदीन यादवने अनुस्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की । अहमदाबाद शहर से जुड़ना सूर्यदीन के लिए बहुत ही शुभ एवं सार्थक सिद्ध हुआ, विशेषकर मित्रों का सहयोग मिलने लगा । अहमदाबाद के मित्रों में रामभरोसे महेश्वरी प्रभुदीन यादव, सुलतान अहमद, आलोक गुप्त, रामबहादुर सिंह ठाकुर, अशोक मिश्र, गिरिजाशंकर मिश्र का प्रेम मिलने लगा । गुरुओं में डो. अवधनारायण तिवारी, करुणेश शुक्ल, रघुनाथ भट्ट, रामअवधेश त्रिपाठी, गुरुदयाल यादव, संतराम पाण्डेय, सत्तीदीन वर्मा, भगवतशरण अग्रवाल, चन्द्रकान्त महेता, रघुबीर चौधरी, भोलाभाई पटेल, भगवानदास जैन, शारदाप्रसाद चौबे, जे.पी.पाण्डेय, जयसिंह व्यथित, अंबाशंकर नागर द्वारा शिक्षा-दीक्षा एवं कार्य-संबंधी सुझाव एवं मार्गदर्शन मिलने लगा, तो सूर्यदीन को लगा कि पूरा अहमदाबाद अपना ही प्रदेश है हालांकि अभावों ने यहां भी सूर्यदीन यादव को घेरे रखा । सूर्यदीन बी.एड़. करते थे तो भी चार घंटा रोज प्रेस में नोकरी तो करते ही थे । उनकी शिक्षा में मित्रो, गुरुओ का साथ, रामानंद प्रेस और गोमतीपुर के नवनीत प्रकाशन की जबरदस्त भूमिका रही है । दादा मोतीलाल यादव के साथ रहते थे पर अपने खर्चे के लिए प्रेस में काम करते थे । इसलिए दादाजी भी प्रसन्न रहते थे । एम.ए., बी.एड. होने के बावजूद कई इन्टरव्यू देने के बावजूद नौकरी नहीं मिली, तो सूर्यदीन काफी निराश हो गये थे । किन्तु प्रेस में कार्य करने वाले हिन्दी-अहिन्दी भाषी मित्र उनके हौसले बढ़ाते थे । इनकी नौकरी पाने में प्रोफेसर करुणेश शुक्ल का जबरदस्त योगदान रहा है । शुक्ल जी के ही सुझाव एवं प्रेरणा से सूर्यदीन १९८० मे पी.एच.डी. करने लगे । शोधकार्य काल में भी वह प्रेस में कंपोजिंग प्रूफरीडिंग वगैरा इत्यादि करते ही थे । कुछ लोग उपहास करते, बोली-टिपोसी कस देते, कहते कि इतना पढ़कर यहां प्रेस से हाथ काला करने को आते हो, किन्तु सूर्यदीन हंसकर सबकी बाते टाल देते थे । तब आकस्मिक रुप से उन्हें नौकरी मिल गई । करुणेश शुक्ल के शिष्य सत्येन्द्र मणि त्रिपाठी अलींद्रा से अहमदाबाद आये और करुणेश शुक्ल से कहा कि उनके विद्यालय में शिक्षक चाहिए । करुणेश शुक्ल ने सूर्यदीन को यह कार्य करने को कहा । बस १९८० में सूर्यदीन को भी एम.एस.पटेल उच्च माध्यमिक विद्यालय में अध्यापक की नौकरी मिल गई । अध्यापक होने के बाद

सूर्यदीन यादव ने साहित्य लेखन चालू रखा । देखते-देखते अलींद्रा गाँव सूर्यदीन की कर्म भूमि बन गई । आज भी अलींद्रा में ही पिछले ३० वर्षो से पढ़ा रहे हैं । उन्होंने १९८६ में पी.एच.डी. की उच्च डीग्री हासिल कर ली । उनके दो पुत्र और दो पुत्रियाँ है । सभी संतानें ग्रेज्युएट, पोस्ट ग्रेज्युएट है । "कवि का नाता कागज से इस प्रकार जुड़ा हैं कि घूम फिरकर कागज कवि के पास ही आ जाता है । कागज टुकड़े-टुकड़े होने के बाद भी पुर्नजन्म लेकर पुनःरचनाकार के पास आ जाता है ।"[२]

सूर्यदीन यादव के व्यक्तित्व की रेखाएँ

माता-पिता :

सूर्यदीन यादव की माता का नाम धानपाबी और पिता का नाम रघुनाथ था । जयलाल उनके दादा थे । सूर्यदीन के पिता रघुनाथ चार भाई है । ज्येष्ठ मोतीलाल यादव, द्वितीय रघुनाथ यादव, तृतीय रघुनंदन यादव तथा चतुर्थ बनवारीलाल यादव । इनकी दादी का नाम छविराजी था । इनके पिता एक साधारण किसान है । ज्येष्ठ भाई मोतीलाल अहमदाबाद में अंबिका मिल में रंगाटी खाता में मुकर्दम थे । द्वितीय रघुनाथ यादव, सूर्यदीन के पिता गांव में कृषि कार्य करते हैं । वे पाँचवी कक्षा तक ही पढ़ पाये थे । तृतीय रघुनंदन यादव पोस्ट ग्रेज्युएट हैं और अहमदाबाद में टी.आई.ट्राफिक इंस्पेक्टर पद से निवृत्त हैं तथा आजकाल गांव में कृषि-कार्य की देखभाल करते हैं और मंदिर के पुजारी भी हैं । चतुर्थ बनवारीलाल यादव गांव में खेती का कार्य सम्भालते है । सूर्य-दीन के पिता रघुनाथ भी कुछ समय तक बड़े भाई मोतीलाल यादव के साथ अहमदाबाद में रहते थे और मील में नौकरी करते थे । किन्तु परिवार और खेती सम्भालने के लिये उन्हें पुनःगांव लौटना पड़ा था । उनके पिता को उनके नाना-नानी को जायदाद मिल गई थी । अतः वे अपने ननिहाल में रहते थे और प्यार पाते थे । पिता के ननिहाल पूरे गंगाराम राजापुर जो उनका जन्मस्थान था ढ़ाहा गांव के पश्चिम दिशा मे छः मील अंतर पर बसा हैं । रघुनाथ के नाना रामदत्त यादव के पुत्र नही थे । चारों बेटियां अपने-अपने घर रहती थी । अतः नाना-नानी की जायदाद सम्भालने के लिए सूर्यदीन के पिता स्थाई रूप से पूरे गंगाराम गांव और ढ़ाहा के आवा-जाही लगी रहती थी । दादी छविराजी का स्नेह वात्सल्य सूर्यदीन को मिलता था । इस तरह दो माताओं के वात्सल्य से सिंचित यादव जी का व्यक्तित्व बहुत ही जीवंत, कर्मठ एवं ठोस हैं ।

घर और परिवार :

सूर्यदीन का व्यक्तित्व दो घरो के आवा-जाही से निर्मित है । मूल घर ढ़ाहा से पैतृक ननिहाल गंगाराम का अतूट संबंध है । यादवजी जब छः वर्षः के थे तभी से विद्यालय

जाने लगें । बड़े भाई रामरूप कभी-कभी अपने साथ इनको भी हसनपुर प्रायमरी स्कूल में पढ़ने के लिए ले जाते थे । इनके माता-पिता ज्यादातर पूरे गंगाराम गाँव में रहते थे। इसलिए इनकी बड़ी बहन शूरशती इन्हें सम्भालती थी । द्वितीय बहन सचकला भी साथ खेलती थी । तृतीय बहन मनराजी सबसे छोटी होने के कारण अपनी मां के साथ रहती थी । सूर्यदीन की तीनो बहनें विवाहित हैं अपने-अपने घर सुख से रहती हैं । बड़े भाई रामरूप यादव जो हाई स्कूल तक पढ़े हैं वह कई वर्षो तक दादा मोतीलाल के साथ अहमदाबाद मे रहते थे और अंबिका मिल में साल खाता चलाते थे । साल खाते की नौकरी अच्छी थी पर वह खांसी आने से बीमार हो गये थे । कहते हैं कि साल खाते में रुई की धूल श्वांसनली द्वारा प्रवेश कर जाती थी और उन्हें बार-बार खांसी आने लगी थी । अस्वस्थवश रामरूप पुनः घर लौट गये थे और सुलतानपुर शहर में ही पी.डब्ल्यू.डी. विभाग में दफतरी पद पर सरकारी कर्मचारी हो गये थे । वह आजकल निवृत्त होकर घर पर अपने परिवार एवं पिताजी के साथ रहते हैं । और खेती का काम करते हैं । सूर्यदीन यादव जन्म से ही हंसमुख एवं सुंदर गौरवर्णीय बालक थे, जिससे वे घर-परिवार के लोगों के प्रिय बन गये थे । गौरवर्ण गोल-मटोल भव्य मुखमण्डल और हंसमुख स्वभाव सबको मोह लेता था । जब वह पंद्रह वर्ष के थे, तभी वादा गांव के भूतपूर्व भारतीय सेना के सैनिक एवं बाद मे गांव के चेयरमैन तथा अंत में ग्राम-प्रधान पद पर रह चुके जगन्नाथ यादव को ज्येष्ठ सुपुत्री सरितादेवी के साथ सूर्यदीन का विवाह हिन्दू वैवाहिक संस्कार के मुताबिक कर दिया गया था । जब वह दशवीं कक्षा की परीक्षा उत्तीर्ण कर इंटर मीडिएट मे पढ़ते थे तभी शादी के पाँच साल बाद उनका गौना लाया गया था । सन् १९७१ में नई पत्नी के आगमन से सूर्यदीन यादव का उत्तरदायित्व बढ़ गया था । वह पारिवारिक सदस्यो को खुश रखने के लिए घर, खेत, सिंचाई में तनतोड़ परिश्रम करते और ऐसे में पढ़ाई करना नाको चने चबाने जैसा था । अनेक अभावो को वह घूंटकर पी जाते और आगे बढते थे किसी लक्ष्य तक पहुँचने की कोशिश करते रहते थे । अब वह स्थायी रूप से पिता के ननिहाल पूरे गंगाराम गाँव में रहते थे और वही से पढ़ने आते जाते थे । सूर्यदीन यादव जब गनपत सहाय डिग्री कॉलेज सुलतानपुर में बी.ए. प्रथम वर्ष में प्रवेश लिया, तभी उन्हें पिता बनने का सौभाग्य प्राप्त हो गया था, हालाकि उनकी पढ़ाई सुचारुरुप से होती रही । उनकी उच्चत्तर पढ़ाई में उनकी पत्नी सरिता देवी का बहुत बड़ा योगदान रहा हैं। प्राइमरी की पढ़ाई में माता-पिता का सम्पूर्ण योगदान रहा । माता-पिता के साथ सूर्यदीन का व्यक्तित्व निखरता रहता था । ग्रामीण परिवेश एवं अभावांचल का प्रभाव उनके जीवन पर बहुत ही गहराई के साथ पड़ा हैं । पिताजी के साथ वह घर खेत और गाँव-समाज के अनेक कार्यो को सीखते रहते थे । माता-पिता दोनों के स्नेह से उनका व्यक्तित्व सिंचित हो गया । उनकी सुशील, गुणवान, सौम्य, भोली एवं आदर्श

पत्नी ने चार संतानो को जन्म दिया । ज्येष्ठ पुत्र सूचेन्द्रकुमार यादव डबल एम.एस.सी. और बी.एड. है जो पिछले दस वर्षो से गुजरात के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा संचालित सरस्वती हाई स्कूल मे नड़ियाद तहसील जिला-खेड़ा में उच्च माध्यमिक विद्यालय में गणित एवं विज्ञान के अध्यापक पद पर कार्यरत हैं । द्वितीय पुत्र चन्द्रेन्द्रकुमार भी डबल बी.एस.सी. और बी.एड हैं जो हाल में कम्प्यूटर हार्डवेयर इंजीनीयर हैं । तृतीय संतान सूर्यलता बड़ी बेटी जो एम.ए. हिन्दी उत्तीर्ण है, विवाहित हैं । छोटी सुपुत्री चन्द्रलता यादव एम.ए. बी.एड. अंग्रेजी से हैं जो नड़ियाद में ही स्कूल में शिक्षिका-पद पर हैं और विवाहित है । सूर्यदीन यादव स्वयं अपने परिवार के साथ हाल नड़ियाद शहर के पुनीत कोलोनी में रहते है । बड़ी पुत्रवधू सुशीला तथा छोटी पुत्रवधू सुमित्रा ग्रेज्युएंट हैं । पिछले ३० वर्षो से उच्च मध्यमिक विद्यालय अलिन्द्रा में अध्यापन-कार्य कर रहे हैं । साहित्य और आदित्य एवं संक्रांति नामक पौत्र हैं ।

पढ़ाई तथा संस्कार :

सूर्यदीन यादवने अपने रचनात्मक निबंध-संग्रह के प्रथम निबंध मे स्वयं लिखा हैं कि "मैं स्कूल जाने से डरता था । स्कूल से नहीं दरअसल गांव के कुछ लोगो से मैं डरता था । वे लोग मुझे और लालता से कुश्ती लड़ा दिया करते थे । मैं भी अपने बनवारी चाचा की ललकार में आ जाता था । कमीज उठाकर बांह जांध पर ताली ठोंककर लालता से भिड़ जाता था । मैं कुश्ती की दांव-पेच नही जानता था और मेरी पीठ लग जाती थी । मैं सोचता था क्यो हार जाता हूँ ? लेकिन कुश्ती और खेल में हार जाने पर मुझे नया बल और उत्साह मिलता था ।"[३]

पारिवारिक स्थिति :

मेरे चाचा रघुनाथ यादव पोस्ट ग्रेज्युएट थे और अहमदाबाद में ही भाई (ट्रॉफिक इंस्पेक्टर) पद से निवृत्त है । छोटे चाचा बनवारीलाल यादव पहलवान किस्म के कुश्तीबाज थे तथा घर पर ही खेती सम्भालते थे । सूर्यदीन के पिता रघुनाथ पांचवी कक्षा तक पढ़ाई कर सके थे । वह भी बड़े भाई के साथ कुछ समय एक अहमदाबाद की मिल मे नौकरी करते थे किन्तु परिवार और खेती सम्भालने के लिए उन्हें पुनः गांव लौटना पड़ा था और सूर्यदीन को माता-पिता दोनो का प्यार स्नेह बचपन से ही मिलने लगा था । उनके पिता रघुनाथ की ननिहाल पूरे गंगाराम राजापुर में थी, ढाहा गांव के पश्चिम से ६ मील के अंतर पर बसा हैं । रघुनाथ के नाना रामदत्त के पुत्र नहीं था । अतः नाना-नानी की सम्पूर्ण जायदाद घर-खेत सूर्यदीन के पिता को सम्भालना पड़ा । अतः बचपन से ही सूर्यदीन यादव पिता के ननिहाल गंगाराम राजापुर में रहने लगे थे । उनके पिता के चारो भाई संयुक्त

परिवार में रहते थे । इसलिए पूरे गंगाराम और ढ़ाहा गांव का अतूट संबंध था । आवा-जाई रोज लगी रहती थी । अतः दो माताओं के वात्सल्य से यादवजी का व्यक्तित्त्व सिंचित होता रहता था ।

सूर्यदीन यादव के पिताजी कृषक थे, इसलिए बचपन से ही सूर्यदीन यादव अपने पिता के साथ खेतो में आया-जाया करते थे । इसलिए उनका लगाव खेती के प्रति अधिक हैं । सूर्यदीन यादव के दो भाई और तीन बहने है । बड़ी बहन सुरसती द्वितीय सचकला तृतीय मनराजी । तीनो बहनें विवाहित है । अपने-अपने घर सुख से रहती हैं । बड़े भाई रामरूप यादव हाई स्कूल पास हैं । वह कई वर्षो तक दादा मोतीलाल के साथ अहमदाबाद मे रहते थे और मिल में सालखाता चलाते थे । लेकिन दो वर्ष बाद अस्वस्थतावश वे पुनः गांव लौट आये थे और सुल्तानपुर जिल्ले में ही पी.डब्ल्यू.डी. विभाग में दफ्तरी के पद पर सरकारी कर्मचारी थे जो अब निवृत्त होकर घर पर अपने पिता के साथ रहते हैं । सूर्यदीन यादव बाल्यावस्था से ही घर-परिवार में सबको प्रिय बन गये थे और गौरवर्ण, गोल मटोल भव्य मुखमण्डल और हंसमुख वदन सबको मोहित कर लेता था । पंद्रह वर्ष को आयु मे ही [illegible]नेवादा गांव के भूतपूर्व सैनिक थे तो बाद में गांव के चेयरमेन एवं गांव प्रधान जगन्नाथ यादव की सुपुत्री सरिता देवी के साथ सूर्यदीन का विवाह कर दिया गया था तथा पांचवे वर्ष मे जब वह दसवीं की परीक्षा पास कर इन्टर मीडिएट मे पढ़ते थे तभी उनका गौना लाया गया था । घर, खेत और पढ़ाई करना असाधारण बात थी। अब वे पिताजी के ननिहाल पूरे गंगाराम में स्थायी रूप से रहने लगे थे और वही से पढ़ने जाते थे । सूर्यदीन यादव जब गनपत सहाय डिग्री कोलेज में बी.ए. मे पढ़ते थे तभी उन्हें पिता बनने का सौभाग्य प्राप्त हो गया था, हालांकि उनकी पढ़ाई उसी तरह होती रही । उच्चत्तर पढ़ाई में उनकी पत्नी का बहुत बडा योगदान रहा हैं । माता-पिता तो प्राइमरी को पढ़ाई में उनके पिता रात दिन एक करते ही थे । माता-पिता के साथ सूर्यदीन यादव का कवित्व निखरता रहता था । पिता जी के साथ उन्होंनें खेतो का, घर का, समाज का हर काम सीख लिया था । माता-पिता दोनो के स्नेह से उनका कवितत्त्व सिंचित होता था । उनकी सुशील गुणवान सौम्य बोली और आदर्श गृहिणी पत्नी ने चार संतानो को जन्म दिया । श्रीमती कान्ति अय्यर यादव जी के व्यक्तित्व के बारे में लिखती हैं कि - ''सूर्यदीन यादव एक ऐसा नाम है जो सोलह वर्ष की आयु से आज पचपन वर्ष की उम्र में अधिक समय अविरत साहित्य साधना में ही व्यतीत किये ॥''[४]

शिक्षा-दीक्षा :

सूर्यदीन की शिक्षा-दीक्षा उनके घरेलू सदस्यों के साथ ही शुरु हो गई थी । चाचा रघुनंदन ग्रेज्युएट और चचेरे भाई शिवप्रसाद यादव इंटर मीडिएट पास थे । इनके भाई रामरूप

भी हाई स्कूल पास थे । वे सब सूर्यदीन को बचपन से ही घर से ही स्वर-व्यंजन लिखवाते थे । वह बचपन मे कुछ समय दादी मां के साथ रहते थे । मां पूरे गंगाराम मे रहती थी । मां के बिछोह मे बालक सूर्यदीन यादव का मन पढ़ने लिखने में नहीं लगता था। दादी लाड़ प्यार करती थी । अच्छा-अच्छा खिलाती-पिलाती थी । पर मां का बिछोह तो सालता ही रहता था । सूर्यदीन को उनके बड़े भाई रामरूप कई दिन अपने साथ पहली कक्षा मे पढ़ने के लिए हसनपुर स्कूल ले गये थे । पर वे रोते थे इसलिए स्कूल से लौट आते थे । चचेरे भाई लालता प्रसाद और सूर्यदीन हमउम्र थे । लालता पढ़ने मे तेज थे और चाचा बनवारी लालता और सूर्यदीन को अक्सर कुश्ती लड़ा देते थे । सूर्यदीन हद कद के छोटे थे । अत: उनकी पीठ लग जाती थी । वह स्वयं को कोसते कि मैं हार क्यो जाता हूँ ? और जीतने के लिए फिर से तैयारी करते थे । चचेरे भाई शिवप्रसाद ने एक दिन देखा कि सूर्यदीन को गिनती भी नहीं आती हैं और दिनभर खेलता रहता हैं तो वो एक दिन साइकिल पर बैढाकर सूर्यदीन को पूरे गंगाराम राजापुर ले गये और वही माता-पिता के साथ रहने लगे और बगल के गांव डोमनपुर में उनकी प्राथमिक शिक्षा प्रारम्भ हुई वैसे पिताजीने घर पर ही सूर्यदीन को शिक्षा-दीक्षा देना शुरु कर दिया था, लेकिन स्कूल में इनके गुरु बजरंगीलाल श्रीवास्तव ने पहली बार उनकी अंगुली पकड़कर लकड़ी की तख्ती पर वर्ण-माला के प्रथम स्वर-व्यंजन लिखाना प्रारम्भ किया । लगभग सात वर्ष की उम्र में वह हिन्दी भाषा के स्वर-व्यंजन लिखने पढ़ने लगे थे । स्कूल में जो पढ़ाया जाता था, उसे घर पर पिता जी दुबारा पढ़ाते थे । खेतो मे व्यस्त होने से पिताजी उनकी पढ़ाई के प्रति अधिक ध्यान न दे पाते थे । बड़े भाई ढ़ाहा में पढ़ते थे इसलिए सूर्यदीन ने अकेले ही पढ़ने का बीडा उठा लिया था । गांव के कुछ सहपाठी थे । किन्तु पिताजी के डर से बालक सूर्यदीन बच्चो के किसी दल के साथ जुड नही पाते थे । उनके पिता अपने निजी ढंग से उन्हे संस्कार देना चाहते थे और सुशिक्षित बनाना चाहते थे । पिताजी का मानना था कि गांव के अनपढ़ लडको के साथ सूर्यदीन की पढ़ाई पर गलत प्रभाव पड़ेगा । हांलाकि सूर्यदीन को स्कूल मे पढ़ने जाते देख कई बच्चे पढ़ने जाने लगे थे । वह प्राइमरी में ही प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण हो गये थे । प्रधानाचार्य बजरंगीलाल श्रीवास्तव के साथ गौरीशंकर श्रीवास्तव, रामबहोर शुक्ल, राम अभिलाष गुप्ता तथा हरिबख्श सिंह जैसे गुरुजनों की शिक्षा-दीक्षा से सूर्यदीन यादव काफी प्रभावित हुए थे । पढ़ने में तेज थे । अत: पंडित रामबहोर शुक्ल उन्हें बहुत प्यार करते थे और वर्ग का मॉनीटर बना दिया था । स्कूल की चाबी भी सूर्यदीन को ही दे देते थे । डोमनपुर से प्रथम श्रेणी मे पांचवी को परीक्षा उत्तीर्ण करके वह जूनियर की पढ़ाई के लिए बेला पश्चिम में प्रवेश लिए । तमाम अभावों में उनकी पढ़ाई हुई । उनकी अच्छी पढ़ाई और कार्यकुशलता को देखकर आचार्य पंडित देवदत्त शर्मा ने उनकी फीस माफ कर दी थी।

घर की आर्थिक स्थिति सामान्य थी । किन्तु उनके माता-पिता पुत्र सूर्यदीन की पढ़ाई के लिए जमीन आसमान एक करके आवश्यक सुविधाएँ जुटाये रहते थे । आठवीं कक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करके सूर्यदीन यादवने वी.पी.इण्टर कॉलेज कुडवार में प्रवेश ले लिया था और १९७० में विज्ञान विषयो को लेकर सूर्यदीन ने दसवी कक्षा उत्तीर्ण कर ली । १९७२ मे जनता इण्टर कॉलेज बलीपुर से १२वीं परीक्षा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की । सूर्यदीन ने देखा कि साइंस विषयों को लेकर पढ़ने वाले उनके कई साथी अनुत्तीर्ण हो गये थे । इसलिए उन्होंने साइंस को छोड़कर सन १९७३ में भी गनपतसहाय डिग्री कॉलेज में हिन्दी, भूगोल, समाजशास्त्र एवं भारतीय संस्कृत विषयों का गहन अध्ययन किया और १९७४ में गोरखपुर विश्वविद्यालय से संबंध गनपतसहाय डिग्री कॉलेज, सुलतानपुर से बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण कर लिया । उनकी कॉलेज, की पढ़ाई बहुत ही संघर्षपूर्ण थी । रोज दस बजे खेत जोतकर और फिर पंद्रह मील साइकिल चलाते हुए दस बजे कॉलेज में पहुंचना नाकों चने चबाना था । 'खेतों में काम करने का मात्र एक ही आशय था. पिताजी के कार्यो में हाथ बटाना' सूर्यदीन बचपन से पिताजी को परिश्रम करते देख संवेदनशील हो उठते थे । इसलिए पढ़ाई की अपेक्षा वह पिता के हर कार्यो में हाथ बँटाना महत्त्वपूर्ण समझते थे । इसीलिए पढ़ने लिखने का बहुत कम समय उन्हें मिलता था, लेकिन उत्साह, धैर्य, आत्मबल इतना अधिक होता था कि वह हर परीक्षा में उत्तीर्ण होते थे और उत्तीर्ण होना ही उन्हें आगे की पढ़ाई के लिए प्रेरित करता था । सन १९७५ मे उक्त महाविद्यालय अमेठी से सूर्यदीन ने एम.ए. की परीक्षा देने के लिए फार्म भर दिया था । किन्तु खेती कार्य में व्यस्त होने से वह परीक्षा की पूरी तैयारी नहीं कर पाये । उसका कारण था समय का अभाव एम.ए. पार्ट वन की परीक्षा एक माह बाद होनेवाली थी । उन्हीं दिनो सूर्यदीन के चाचा रघुनन्दन यादव अहमदाबाद से छुट्टी लेकर गांव आये हुए थे । सूर्यदीन का मन चाचा के साथ जाने के लिए हुलक उठा और एम.ए. की परीक्षा छोड़कर चाचा रघुनन्दन के साथ अहमदाबाद (गुजरात) चले गये । चाचा जी के साथ सूर्यदीन का गुजरात मे पहुंचना उनके लिए बहुत ही सौभाग्य की बात थी । वहीं से उनके जीवन में एक परिवर्तन आ गया । वह परिवर्तन है शायद गुजरात-परिवेश का लगाव और वहाँ के लोगों का प्यार । सूर्यदीन अपने चाचा रघुनन्दन यादव के साथ सादरा गांव में रहने लगे और वहीं पर उन्होंनें गुजराती भाषा पढ़ना और लिखना सीख लिया । चाचाजी के मना करने पर भी उन्होंने मुद्रण कला को कंपोजिग प्रूफरीडिंग पेजिंग वगैरह हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी तीनो भाषाओं का काम सीख लिया था । स्वमानी स्वाभाव के चाचाजीने सूर्यदीन के लिए कभी किसी नौकरी के लिए किसी से कोई सिफारिश नहीं की । पर जब इन्होंने बी.एड. करने की इच्छा व्यक्त की तो एक दिन दहेगाम कॉलेज के आचार्य रघुनाथ भट्ट से मिले और उनकी पहचान से सूर्यदीन को विवेकानन्द बी.एड. कॉलेज रायपुर अहमदाबाद में प्रवेश

मिल गया था । १९७७ मे प्रेस की पार्ट टाइम नौकरी करते-करते इन्होंने बी.एड. की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली । यादवजी को बेकार बैठे रहना और बेकार बैठकर खाना अखरता था । इसीलिए वह प्रेस की नौकरी करते रहे । गुजरात युनिवर्सिटी से बी.एड. हो जाने के बाद उन्होंने हिन्दी विषय लेकर एम.ए. की परीक्षा सन् १९७९ में उत्तीर्ण कर लिया। उन्हीं दिनो गांव के हद-पद चाचा लगनेवाले सतीदीन वर्मा से अहमदाबाद में परिचय हुआ। वर्माजी जिला-निरीक्षक पद से निवृत्त हैं । सूर्यदीन यादव का मजमा प्रोफेसर करुणेश शुक्ल की हारमोनियम की दूकान हनुमान गांधी रोड, अहमदाबाद में अक्सर होता । और उसी दुकान पर चाचा रघुनन्दन के मित्रो-रघुनाथ भट्ट संतराम पाण्डेय शारदा चौबे, करुणेश शुक्ल और अवधनारायण त्रिपाठी के साथ चर्चाएँ होती थी और सूर्यदीन सुनते थे काफी कुछ पाते थे । युनिवर्सिटी मे डॉ. रघुबीर चौधरी, डॉ. भोलाभाई पटेल, डॉ. रामकुमार गुप्ता, डॉ. रजनीकांत जोशी, डॉ. चन्द्रकांत महेता जैसे हिन्दी के प्रोफेसर करुणेश शुक्ल और उनके बड़े दामाद गिरिजाशंकर मिश्र की पहचान से सूर्यदीन यादव को गुजरात के सबसे बड़े प्रकाशन एवं प्रेस नवनीत प्रेस गोमतीपुर में कंपोजिंग एवं प्रूफरीडिंग खाते में नौकरी मिल गई थी । इसके पूर्व चाचा रघुनंदन को पहचान से नव प्रभात प्रेस में पार्ट टाइम काम कर चुके थे । प्रेस का अनुभव यादव जी को साहित्य-साधना में चार-चांद लगा गया। उन्हीं दिनो एक दिन जब सूर्यदीन यादव करुणेश शुक्ल की दुकान पर बेठे थे तो प्रोफेसर शुक्ल जी ने पान कूचते हुए कहा तुम एक काम करो तुम एम.ए. हो गए । अब पी.एच.डी. कर डालो । सूर्यदीन के मन की बात शुक्लजी ने कह दी, उन्होंने उसी दिन से अध्ययन करना शुरु कर दिया । सन् १९८० में "कथाकार रामदरश मिश्रः व्यक्तित्व और कृतित्व विषय लेकर उन्होंने डॉ. अवधनारायण के निर्देशन मे शोधकार्य आरम्भ कर दिया । उन्हीं दिनो सितम्बर १९८० में सूर्यदीन को एम.ए. पटेल विद्यालय अलिंद्रा में हिन्दी-अध्यापक पद पर नियुक्ति हो गई और वह पढ़ाने लगे । शोधकार्य भी करते रहे और १९८६ में गुजरात यूनिवर्सिटी ने उनके विषय कथाकार रामदरश मिश्रः व्यक्तित्व और कृतित्व को स्वीकार कर उन्हें पी.एच.डी. की उपाधि दी। सूर्यदीन के लिए शिक्षा-क्षेत्र में यह बहुत बडी उपलब्धि थी । अब उनके लेखन और अध्ययन का साहित्यिक मार्ग स्वयमेव खुल गया और वह जमकर लिखने लगे । श्रीमती कांति अय्यर लिखती है कि कितना विस्मयकारी तथ्य हैं कि सूर्यदीनं यादव जी ऐसे लाखों में एक होनहार विरवा है जो गांव मे जन्म लेकर कठिनाइयों को भोगकर डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त कर नामवर साहित्यकार बन सके हैं । हालांकि-लेखनकार्य का प्रारम्भ वह आठवी कक्षा से ही प्रारम्भ कर चुके थे पर तब का कच्चापन पी.एच.डी. बाद के लेखन में काफी पुख्त हो गया । साथ ही उस्मानिया यूनिवर्सिटी हैदराबाद से पुनः एम.ए. की परीक्षा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की ।

लेखन की प्रेरणा :

जब सूर्यदीन यादव आठवी कक्षा में पढ़ते थे तभी गुरुवर पंडित दादा दीन तिवारी की काव्य-पंक्तियां सुनकर कविता लिखने लगे । वह काव्य-पंक्तियां आगे लिखी है । वह अपने गुरुवर दादा दीन तिवारी की चंद पंक्तिया सुनकर पहली बार अपने मन मन में काव्यांकुर फूट पड़ने पर उछल पड़े थे । वे पंक्तियाँ थी -

"रहा मुकदमा सुलतानपुर मा लैके चले झोली-झंडी ।
भवा प्रकार देर जब हुवै लागी खात चले भूंजी गंजी ।"[५]

और उन्हीं दिनो दोहा, गीत, दोहा-भजनः के शौर्य गीत वगैरह वह लिखने लगे थे। यानी लेखन का प्रारम्भ कविता से हुआ और उसी दिन से वह गीत लिखने लगे थे । १९७७ में उनका प्रथम गीत संग्रह 'हिन्द्द वाहिनी भूषण कवि गुरुवर गोविन्द सिंह जी' के मार्गदर्शन मे प्रकाशित हुआ । देशभक्तिगीत संग्रह हिंद्वाहिनी की हजारों प्रतियाँ बिक गई थी । वह भेलो हार में स्कूलो मे गा-गाकर बेच दिये थे । उन्होंने अपनी पहचान एक देशभक्त के रूप मे बनाई है । उनके गीत उस युद्ध काल के लिए है जब भारत-पाकिस्तान का युद्ध चल रहा था और जवानो की हिम्मत साहस बढ़ाने के लिए वह शौर्य-गीत अधिक लिखते थे । तथा ते दुश्मन हो जा खबरदार (हिन्दी वाहिनी से) नीचे से ही जड़ काट दूँ, हूँ भारतवासी समझदार । यादवी जी प्रकृति-प्रेमी तो बचपन से ही थे। प्राकृतिक संवेदना की देन ही उन्हें कवि बना देती है । पानी बरस रहा था । उसे देखकर वे कविता गुनगुनाने लगे थे -

बादल गरजे पानी बरसे झर-झर,
छक-छक रिमझिम-रिमझिम ।"
दामन थामे मृग से प्रियतम,
लेत कली के चुंबन चुन-चुन ।'

(फाल्गुन बीत जा रहे है) फाल्गुन बीते जा रहे हैं (१९९३) उनका द्वितीय गीत-संग्रह हैं जिसमें लोकगीत, प्राकृतिक गीत जैसी कविताएँ हैं । तृतीय काव्य-संग्रह दूसरा गाँव भी चर्चास्पद एवं लोक प्रिय कृति मानी जाती हैं । उसमे नारी-चेतनावादी कविताएँ हैं। दूसरी आँख की कविता हिन्दी साहित्य-परिषद अहमदाबाद द्वारा पुरस्कृत हुई थी । 'दूसरी आँख की लोकप्रियता के प्रमाणार्थ पाठकों के पत्रो की चंद पंक्तियाँ पेश करना चाहूंगा। यथा-"एक आँख में हंसी सजी है, एक आँख में पानी गुप्तजी की इस पंक्ति को नकारती आपकी यह दूसरी आँख वामा नहीं पुरुष का एक हाथ उसकी दूसरी आँख हूं ।' प्रस्तुत

पुस्तक 'दूसरी आँख' में वर्णित नाती को त्याग तथा कर्तव्य-निष्ठा के मूल में निहित है नारी का तेजोमय मंगलरूप सूर्यदीन यादव का चतुर्थ काव्य-संग्रह 'लगे मेरा गांव' २००१ में प्रकाशित हुआ । उसमें गांव-परिवार और माटी से उपजी कविताएँ ग्रामीण मानव-जीवन के यथार्थ को जीवंत करती हैं । पंचम काव्यसंग्रह बूँद २००४ में, षष्टम काव्यसंग्रह 'उछलत्ती हुई लहरे २००५ में, सप्तमकाव्य कृति 'प्रेरणा' २००६ में तथा अष्टम काव्य कृति 'हमखून लालरंग के' सन, २००८ में प्रकाशित हुआ।

व्यक्तित्व के आयाम :

जमीन ऊर्जा के कवि सूर्यदीन यादव :-

कवि-हृदय होने के बावजूद सूर्यदीन की कविता जमीन की उपज कही जा सकती हैं । उनकी रचना के जन्मदायी भी जमीन है, परिवेश है, देशकाल है । काव्य सृजन में कवि की अनिवार्यता में सूर्यदीन ने स्वयं लिखा है कि रचनाकार जिस क्रिया-प्रक्रिया या घटना-प्रकोष्ठ से प्रभावित होता हैं, उन्हीं अनुभवों के आधार पर वह काव्य-सृजन करता हैं । घटनाएं उसके निजी जीवन की हो या किसी और निकट पात्र की वह परिवेश से जुड़कर प्रकृति के अनुरूप अपनी रचना को रंग-रूप देता हैं । यही वेश एवं प्रकृति से उद्‌भवित रचना प्राण-चंत लगती हैं ।

सूर्यदीन की रचनाओं पर उनके गांव, परिवेश, जमीन, सिवान, खेत और देशकाल का प्रभाव है । अभावो और संघर्षो में रचना कैसे जन्म ले लेती हैं, यह शोध का विषय हो सकता है, क्योंकि सबकी संवेदनाएं भिन्न होती हैं । परिवेश भी भिन्न, हो सकता हैं, किन्तु सूर्यदीन तो माटी में ही रहे-जीये रचनाकार हैं । इसलिए उनकी रचना में जमीन और माटी की मिली सुगंध आना स्वाभाविक हैं । उन्होंने फागुन बीते जा रहे है, नामक संग्रह में 'कांस' कविता में अपने उसर एवं रण जैसे जीवन की उपज को कविता माना हैं, यथा-

बन गय उपजाऊ पहले जो असर था,
आज उसी असर में आँख अँखुआया
पहले ही रण बगिया में उगे थे जो खर-पतवार ।
लगे कही बंजर में कांस उग आया हैं ।
नहीं जानता कैसे कांस जड़ पाया हैं ।
पला जिन आभावो में डूबकर तर आया,
लगे कहीं कींचड़ में कमल खिल आया हैं, ।

कींचड में कमल खिलता हैं, कहावत काफी पुरानी हैं ऊसर जमीन में आँख (अंकुर) आँख आ जाना, पत्थर में अंकुर फूटने जैसा है । कवि का जीवन एक कांस (घास) जैसा हैं जो कभी जमीन से समारत हो नहीं हो सकता हैं । अनेक कष्टों अभावो के बीच कवि रचता रहता हैं ।

माटी से उपजे कहानीकार :

वर्षाऋतु से घने कच्चे घर गिर जाते है । 'कच्चा घर' कहानी में काका बिहारी से कहते हैं कि "कच्चे घरों का क्या ठिकाना अधिकांश तह मिट्टी को मिट्टी क्षणभंगुर -सी । बनते-बिगड़ते देर नहीं लगती । आज हम भी गिर सकते हैं । कल तुम भी गिर सकते हो । (घर) कभी चुन-चुन कर चमचमाकर बनाये गये थे । आज गिर गये । मिट्टी के कच्चे घर मिट्टी में मिल गये । यह कथन प्रमाणित करता हैं कि जिस तरह माटी से निर्मित कच्चे घर गिर-पड़ जाते है और मिट्टी में मिल जाते हैं उसी तरह हमारा शरीर अंततः मृत्यु के बाद पंच महातत्वों में विलीन हो जाता हैं । दरअसल गांव घर खेत सिवान खलिहान एवं माटी से उपजी कहानियां माटी से ही निर्मित हुई हैं । ऐसे ही सूर्यदीन यादव है जो माटी से निर्मित हुए लगते हैं । उनकी जमीन माटी ही हैं ऐसा कहना समीचीन होगा । वह माटी से निर्मित हुए कहानीकार माने जाते हैं । उम्र ढलने पर काका सोचते है कि गांव में सब घर कच्चे मेरे घर जैसे है। कइयों के घर इसका वर्षा में ढह गये। आज यह कच्चा घर बूढा हो चला हैं । 'ऊसर जमीन' कहानी भी मानव-जीवन का प्रतीक हैं। ऊसर जमीन को जोत-गोड़कर उपजाऊ बनाते हुए रघुपत दादा संवरकी मिलने के प्रति संवेद्य हो उठते हैं । संवरकी को उसके पति से मिलने नहीं दिया जाता है और बोझ करार देने के लिए उसे घर से बहिष्कृत कर दिया जाता है । लेकिन सात महीने के बाद परदेश से चिट्ठी आती हैं कि सँवरकी मां बनने वाली है और वह चिट्ठी पोस्टमैन पढ़कर दादा को सुनाता है । तब रघुपत दादा राम-राम ऊसर में अंकुट फूट गये है । संवरकी मां बननेवाली हैं । इस कहानी में सबसे कहने लगे-मेरी ऊसर जमीन उपजाऊ हैं । उनकी बढ़िया फसल उगेगी खेती और जमीन तथा उसकी माटी के कण-कण से कहानीकार का जीवन निर्मित हैं । 'इस्तीफा' कहानी में भी माटी को जीवन का प्रतीक माना गया है । जब सल्हर महाराज शीतला से उसके जमीन का इस्तीफा मांगते हैं, तब शीतला कहता हैं-'खेत हमारे हाथ है हम अपना हाथ कटवाना नहीं चाहते...।"[६] हम अपनी धरोहर की रक्षा करेगे । जमीन हमारी सब-कुछ हैं । मां है । पालती-पोषती है । अपनी मां का इस्तीफा हम नही देंगे । 'वह रात' कहानी-संग्रह में भी 'दुःख की कहानी', 'गया वर का पेड़' 'दहशत का हथौडा' 'बिना बाप का बच्चा' आदि कहनियाँ है । जमीन परिवेश को लेकर घर का बंटवारा होना अर्थात् जीवन का बंटवारा । जर के लिए झगड़ा होता

हैं तब देसई ईख गरज उठती है । तनकर कहती है । में कई साल तक कोल्हू के साथ पिली हूं । जेठजी तुम कोल्हू की तरह हमारे परिवार को चुहुकते रहे । पंद्रह साल का हिसाब दो । श्रीमती कांति अय्यर ने अपने समीक्षा-कृति 'आँचलिक कथा-सर्जक सूर्यदीन यादव' में लिखा है-''कच्चे-सच्चे उगते-बढ़ते यह मानव-देह एक मिट्टी की दीवार ही तो हैं । एक दिन मिट्टी में मिल जायेगी कच्चे घर की तुलना मानव-जीवन से की गई हैं। डॉ. मायाप्रकाश पाण्डेय ने संवाद व कृति ''कथाकार सूर्यदीन यादव'' में सूर्यदीन यादव की कहानियों के संदर्भ में लिखा है कि सूर्यदीन यादव दरअसल गांव एवं शहरी परिवेश से जुड़े यथार्थवादी कथाकार माने जाते है । सन् १९६९ मे लिखी उनकी 'चित्रित नवीन कहानियाँ' संग्रह की सचित्र कहानियाँ पढ़ने से लगता हैं कि वह बाल्यावस्था से ही कहानियाँ लिखने लगे थे । यादव जी अनुभूति जन्म चेतनावादी लेखक होने के नाते अपने आस-पास के जीवंत परिवेश (जहाँ वे स्वयं रह चुके होते है) से मसाले चुनते हैं । सूर्यदीन यादव यथार्थवादी आँचलिक कहानीकार हैं । वह सच को उसी रूप में चित्रित कर देते है । उनके अनुभव स्वयंमेव कागज़ पर अपने असली रूप में उभर आते हैं । यादवजी ने अपनी कृति ''प्रारम्भिक रचना और प्रेरक व्यक्तित्व'' में स्वयं लिखा हैं कि ''मेरे जो अनुभव हैं मैं उन्हीं को ज्यो-का-त्यो रचना में पिरो देता हूँ । शब्दों को तोड़ना मरोड़ना या काट-छाँट कर तरासना जिसे लोग फैशन या कला समझते हैं वह मैं कम कर पाता हूँ । शब्दों को फैशनेबल एवं कलात्मक कर्ण प्रिय बनना चाहिए । हर बात से सहमत हूं । किन्तु जहाँ औपचारिकता की बात आती हैं वहाँ में सच को सच ही बने रहना देता हूँ । पत्थर के तीते से नही । इस तरह माटी के ढेले-सा कहानीकार सूर्यदीन यादव का जीवन कुछ-कुछ उगाने निर्माण-कार्य या रचने की प्रक्रिया मे गतिमान रहता हैं । अतः उन्हें माटी से निर्मित कहानीकार कहना यथोचित होगा ।

द्विअंचल-आयामी उपन्यासकार :

रचनाकार का कृतित्व उसके अन्तर बाह्य दहरे व्यक्तित्व पर आधारित होता है । व्यक्ति का प्रकृति से ओत-प्रोत होने के कारण उसके कृतित्व के ताने-बाने उसी रंग-बिरंगी प्रबन्धमयी अंचल के तार-तार से बुना गया वस्तुनुमा ही होता है जिसे उपन्यासकार आधा पूरा समय असमय बल्कि दिन-रात हर घड़ी हर परिस्थिति में समेटे हुऐ होता हैं। लेखक सूर्यदीन की उपन्यासिक रचना का प्रारम्भ साठोत्तरी सदी के बाद का माना जाता है । लोग गांव और शहर का अटूट नाता हैं । सूर्यदीन यादव का प्रथम उपन्यास 'दूसरा आंचल' वास्तव में गांव से शहर के बीच अटूट रूप से जुड़ा द्विपरिवेशीय औपन्यासिक दिया हैं जो उत्तर प्रदेश और गुजरात परिवेश के ताने-बाने से बुनी गई यथार्थ कथा है। समीक्षक कान्ति अय्यर ने 'दूसरा आंचल' की समीक्षा करते हुए अपनी समीक्षा कृति-

''आंचलिक कथा-सर्जक सूर्यदीन यादव'' में लिखा हैं-''दूसरा आंचल में गांव और शहरी परिवेश के हर घर, हर घटना, हर आदमी के परोक्ष प्राकृतिक एवं भौगोलिक सभी को यादव जी ने नजरअंदाज किया है और उन्हें उसी रूप में जीवंत भी किया है । इसलिए द्विपरिवेशीय कथा शैली के आधार पर लिखा गया है ''दूसरा आंचल'' । उत्तर प्रदेश एवं गुजरात के ताने-बाने से बुना गया एक जटिलसंघर्ष-मय यथार्थ चित्रवाला मौलिक उपन्यास है । यह शायद इतना जीवंत इसलिये बन पड़ा है कि लेखक स्वयं अमित के रूप मे सूत्रधार बनकर उपस्थित रहता है ।''[७] अपनी निबन्ध कृति 'जहाँ देने की अपेक्षा पाया' में सूर्यदीन यादव ने अपने प्रथम उपन्यास की रचना के प्रति लिखा है कि १९६९ में ही उपन्यास लिखना प्रारम्भ कर दिया था । एक मित्र की प्रेरणा से एक उपन्यास लिखा था । एक दिन मैंने इम्तयाज से पूछा कि क्या हम कहानी उपन्यास नहीं लिख सकते? वे बोले यह कार्य-पढ़े-लिखे बड़े लोग कर सकते है । हमारी उतनी औकात कहां ? मैंने कहा-लिखने के लिए औकात क्यों ? उपन्यास हम भी लिख सकते है । बस बात का बतंगड़ हो गया। एक महीने में सौ पेज का उपन्यास मैंने लिखकर इम्तियाज को दिखाया। उपन्यास का नाम था 'प्रेम-स्त्रोत' उपन्यास सन् २००५ में ३२ वर्ष बाद प्रकाशित हुआ। उसके बाद तो सूर्यदीन यादव ने कई उपन्यास प्रकाशित हुए और चर्चास्पद रहे । 'मां का आंचल', 'ममता' और 'अंधेरा जहां उजाला' उपन्यासो में मांटी, जमीन और मां के रंग में रंगे परिवेश यथार्थ रूप में चित्रित एवं रुपायित हुआ हैं । इन दिनो उपन्यासो में गांव-परिवेश हो उभरकर सामने आता हैं किन्तु परदेश से लौटते वक्त गांव में यदाकदा दिखाई पड़ जाती हैं । 'मां का आंचल' में सुबरन परदेश में जाता है । उसके जैसे अनेक लोग आजादी के बाद गांव छोड़कर नौकरी करने परदेश जाते है । 'ममता' में भी भोला के चाचा दादा वगैरह परदेश में रहते है और शादी-ब्याह जैसे खास प्रयोजनो में गांव आते है । 'अंधेरा जहाँ उजाला' में तो दिवाकर परदेश से लौटकर रामजीत की बेटी की शादी में आया ही नहीं होता बल्कि उसकी बेटी उजरी के वापस लोट जाने पर दिखाकर एकाएक एक लड़के से उजरी को शादी करवाता हैं । वह लड़का भी परदेश में नौकरी करता है। इस तरह सूर्यदीन के तीनो आँचलिक उपन्यास गांव-परिवेश पर आधारित होते हुए भी शहर-परिवेश से कही न कही जुड़ जाते है । इसके अलावा सूर्यदीन के द्विपरिवेशीय उपन्यासो 'दूसरा आंचल' 'चोराहे के लोग' एवं 'प्रेमस्त्रोत' और 'जमीन' में तो गांव और शहर परिवेश दोनों के आधार पर कथा रची गई हैं । 'दूसरा आंचल' में अमित गांव छोड़कर अपने चाचा के साथ गुजरात जाता हैं और अहमदाबाद में पढ़ाई करता हैं और वहीं से वह गांव से भी जुड़ा रहता हैं । 'प्रेम-स्त्रोत' की कथा भी श्याम और शीला के प्रेम को लेकर रची गई है पर शीला की शादी अहमदाबाद में होना और श्याम को अहमदाबाद में नौकरी मिलने से प्रेम की कथा भी परिवेशो में घूमती है । श्यामू-शीला दोनों मुख्य पात्र दरअसल

गांव से आकर शहर में रहते है । 'चौराहे के लोग' उपन्यास की कथा बडे ही मनो वैज्ञानिक ढंग से गांव से ही शुरु होती है और भारत के कई शहरो बलसाड, अहमदाबाद, सूरत, सुलतानपुर के चौराहे पाखंडी लोगो को लेकर कथानक बनाया गया है । यानी गांव के ही पास शहर में आकर समाज और देशकाल की सच्चाई का खुलासा करते हैं । 'जमीन' उपन्यास की कथा गुजरात और उत्तरप्रदेश के गांवो से उपजी कथा है । वनराज सिंह और रवि दोनों आस-पास गांव से आकर गुजरात में नौकरी करते है । रवि पी-एच.डी. करते हुए प्रेस की नौकरी करता है और वनराज सिंह जंगल विभाग में इंस्पेक्टर है । इनके अलावा और कई पात्र उत्तरप्रदेश और राजस्थान के है जो अपनी जन्मभूमि छोड़कर दूसरी जमीन अर्थात् गुजरात के गांवो में रहते है । इस तरह जमीन में भी यादव जी दो परिवेशों के यथार्थ को चित्रित करते है ।

स्पष्ट बेबाक समीक्षक :

डॉ. सूर्यदीन के प्रथम समीक्षा-ग्रन्थ 'कथाकार रामदरश मिश्र' (१९९७) की उपयोगिता एवं चर्चास्पद इस बात की झांकी है कि वह एक अच्छे जाने-माने समालोचक एवं बेबाक समीक्षक भी हैं । कथाकार रामदरश मिश्र उनके शोध-प्रबंध का संशोधित समीक्षा-ग्रन्थ हैं जो गुजरात के बडौदा, पाटन सौराष्ट्र यूनिवर्सिटी अवध यूनिवर्सिटी में पाठ्य पुस्तको के संदर्भ-ग्रन्थ के रूप में लग रहा । भारत के अनेक छात्र-छात्राओं ने भी उस पुस्तक का अध्ययन किया वह काफी उपयोगी सिद्ध हुआ था । उसके बाद तो अनेक अच्छी समीक्षाएँ पत्रिकाओ में सूर्यदीन यादव द्वारा लिखी प्रकाशित हुई 'सुदर्शन मजीठिया का औपन्यासिक शिल्प' (१९९९) उनका दूसरा समीक्षा-ग्रन्थ हैं कथाकार सुदर्शन मजीठिया के उपन्यासों और कहानियों की विरल वर्णात्मक विशद समीक्षा लिखी गई हैं । सूर्यदीन यादव का रामदरश मिश्र को कविता-सृजन के रंग समीक्षा-ग्रन्थ २००५ में दिल्ली से प्रकाशित हुआ । इनके चारो समीक्षा-ग्रन्थ संसार को लेकर यह समीक्षा-ग्रन्थ तैयार किया गया है जिसमे मिश्रजी की कविताओं के हर रंग यथा-सामाजिक चेतना, व्यापारिक चेतना, मनोवैज्ञानिक चेतना ऐतिहासिक चेतना सांस्कृतिक चेतना, मानवीय मूल्य चेतना इत्यादि विविध मुद्दो का विश्लेषण किया गया है । रामदरश मिश्र की कविता-सृजन के रंग का विमोचन दिल्ली में डॉ. मैनेजर पाण्डेय के वरद हाथों से हुआ । काफी चर्चास्पद लोकप्रिय तथा पाठको के लिए उपयोगी सिद्ध हुआ । सूर्यदीन यादव का चतुर्थ समीक्षा-ग्रन्थ 'रोजमर्रा की जिन्दगी बनाम आज की कविता' २००६ में दिल्ली में प्रकाशित हुआ जो बहुत हो लोकप्रिय एवं अध्ययन विदो के लिए उपयोगी सिद्ध हुआ । उसमे कई जाने-माने रचनाकारो को कृतियो पर लिखी समीक्षाओं को संगृहीत किया गया हैं । यादव जी ने भूमिका में लिखा भी है कि 'रोजमर्रा की जिन्दगी बनाम आज की कविता' 'सुदर्शन मजीठिया का औपन्यासिक

शिल्प' पुस्तक की भूमिकास्त्रोत मजीठिया जी यादवजी के बारे में लिखते हैं कि ''सूर्यदीन यादव हिन्दी के उत्साही शिक्षक है । वे हिन्दी के उदीयमान लेखक हैं ।''[८]

सुदर्शन मजीठिया का औपन्यासिक शिल्प डॉ. सूर्यदीन यादव भूमिका में है पारस्परिक स्वाभिनन्दन-ग्रन्थो से हटकर एक ऐसी सर्वदा भिन्न रचना-कृति है जिसमें अनेक रचनाकारो की रचनाओं से रू-ब-रू होते हुए मैंने नये संदर्भीय प्रतिमान की नयी दिशा निर्देशित की हैं । आमतौर पर कृतियो पर लिखी गयी प्रकाशित समीक्षाएँ लापरवाही से बगल कर दी जाती है । मैंने उन्हें सुधारने की कोशिश की है । उन प्रतिमानो को पुनः प्रति स्थापित 'रोजमर्रा की जीन्दगी बनाम आज की कविता' भूमिका से इस तरह सूर्यदीन यादव चार समीक्षा-ग्रन्थ लिखकर एवं प्रकाशित होकर के प्रखर समीक्षक एवं बेवाक समीक्षक के रूप में अपनी पहचान बनाने में सफल रहे है ।

संघर्षशील व्यक्तित्व :

यादव जी के संघर्षशील व्यक्तित्व के बारे में श्रीमती कांति अय्यर लिखती हैं कि-

''सूर्यदीन यादव एक ऐसा नाम है जो सोलह वर्ष की आयु से आज पचपन वर्ष की उम्र से अधिक समय अविरत साहित्य साधना में ही व्यतित किये ।''[९] यादव जी अपने जीवन में संघर्ष के तूफानो को झेलते हुए 'सूर्य की भांति अडिग खड़े रहे । 'यथा नाम तथा काम' उक्ति उन पर पूर्वतः चरितार्थ होता है । जायसी की उक्ति जो जितना जलेगा वह कैसे नहीं महकेगा भी उन पर पूर्णतः खरी उतरती हैं । अंधकार के आवरण को ओढ़कर प्रकाश की पवित्रता का ढ़िढ़ोरा पीट-पीटकर जीनेवाले निशाचरों के बीच सूर्य की तरह जीने का संकल्प सरस्वती पुत्रो में ही होता हैं । कोयला जितना ही अधिक गहरा तपेगा वह उतना ही खरा हीरा बनकर निकलेगा । ठीक उसी प्रकार प्रतिभा सम्पन्न पुत्रो की भांति उनकी लेखनी में निखार आया । श्री सूर्यदीन यादव उम्र में अभी पांच दशक ही पूरे किए है । उनमें अभी पर्याप्त ऊर्जा है और सार्थक तथा महत्वपूर्ण रचना-लिखने की प्रबल आकांक्षा उनका अनुभव पर्याप्त समृद्ध हैं और वे अपने रचना कर्म में बेहद ईमानदार भी है किन्तु रचना महज अनुभव ही नहीं चाहती वह अपने रूप और उस रूप को गढ़ने सवारनेवाले उपकरणो की सहिष्णुता और समृद्धि की मोहताज भी होती है । परिकल्प और जीवन्त-अनुभव संवेदना को जब समर्थ अभिव्यक्ति मिल जाती है । बड़ी और महत्वपूर्ण रचना का जन्म भी तभी होता है । सूर्यदीन यादव को अर्जित करना शेष है-जिसके लिए वे प्रयत्नशील है । डॉ. सूर्यदीन यादव के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में श्रीमती कांति अय्यर लिखती हैं कि- ''सूर्यदीन यादव के व्यक्तित्व और कृतित्व की अग्नि के समक्ष इस दुनिया की सारी छल-झूठ और सारहीन प्रलोभन सबके-सब भस्मसात हो जाते है ।''[१०] हमारे देश के एक नहीं हजारो महापुरूष महान-लेखक, कवि, साहित्यकार अभाव, दरिद्रता

भरी जिन्दगी की उपेक्षा कर दृढता से अपने उच्च लक्ष्य पर कदम बढ़ाते हुए शिखर पर पहुंचते है । दृढता चाहिए साधन के मार्ग खुलते जायेगे । अभावो में काफी किया जा सकता है । 'जहां चाह वहां राह' इस कहावत को स्थापित किया गया है । यथा संकटो अभावो से जुझते हुए हमे अपने किसी लक्ष्य की और बढ़ते रहना चाहिए । यह संघर्ष चेतना का द्योतक है । "कितना विस्मयकारी तथ्य है कि सूर्यदीन यादव जी जैसे लाखो में एक होनहार बिरवा है जो गांव मे जन्म लेकर कठिनाईयों से मित्रता कर डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त कर नामकर साहित्यकर बन सके है ।"[११] कहने की आवश्यकता नहीं हैं कि यादव जी का जीवन आरम्भ से ही संघर्ष पूर्ण रहा । उन्हें जीवनभर परिवार चलाने के लिए जीविका की तलाश में गांव-से लेकर गुजरात तक और गुजरात को मील फैक्टीरियों में भटकना पड़ा । मैंने उनकी रचनाओं को पढ़ने के बाद पाया कि उनमें एक उपेक्षित, निराश और संघर्षशील लेखक मौजूद था । जो अपनी अस्मिता के लिए बराबर बेचेन रहता था, हालांकि उनकी बेचेनी एक जेनुइन लेखक की थी । यही कारण था कि कभी-कभी उनमें गजानन माधव मुक्तिबोध का सा अभावग्रस्त और संघर्षशील जीवन जीनेवाले एक व्यक्ति के भी दर्शन होते हैं ।

स्पष्टवक्ता :

यादवजी के व्यक्तित्व के बारे में पढ़ने के बाद हमें अहसास होता हैं कि उनका जीवन स्पष्टवक्ता के रूप में हमारे सामने उभरकर आता है । इसमें यादव जी की मान्यता है कि-व्यक्ति का व्यक्तित्व दुहरी दीवाल से बना होता हैं । अन्त बाह्य दोनों व्यक्तियों के सुमेल से किसी नवरचना का उद्‌भव होता हैं । नाम् व्यक्तित्व कही और कार्यरत हो अन्तव्यक्तित्व से आप कविता लिखना चाहे तो सफलता नही मिल सकती । अन्तः प्रेरणा और बाह्य प्रेरणा की साझेदारी से रचना निर्मित होती हैं । आनेवाली पीढ़ियों के लिए हमें भी कुछ न कुछ करना चाहिए । यादव जी कहते हैं । काश मानव जीवन भी वृक्ष सा - परोपकारी होता । यथा उन हरे-भरे और छायादार आम के पेड़ों से मुझे लिखने की प्रेरणा और जीने की शक्ति मिलती है । वृक्षो का परोपकारी जीवन मुझे निःस्वार्थ भाव से काफी कुछ लिखने की प्रेरणा देता हैं । अनुभवों को निबंधकार निबंध एवं संस्मरण का मिला-जुला लालित्य सूर्यदीन की रचनात्मक एवं संस्मरणात्मक ने बन्धिक कृतियां 'प्रारम्भिक रचना और प्रेरक व्यक्तित्व' (२०००) 'जहाँ देने की अपेक्षा पाया' (२००३) में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है । प्रारम्भिक निबंध-शैली से हटकर एक अनुभव-प्रधान से बांधिक शैली में लिखने वाले निबंधकार सूर्यदीन यादव के निबंध (आंचलिक कथा सर्जक-सूर्यदीन यादव रामदरश मिश्र के निबंधो और संस्मरणो की अनुभव-प्रधान शैली परम्परा के कहे जा सकते है । सूर्यदीन की इसी शैली का तरीका उनके निबंधो में देखा जा

SMT. HANSA MEHTA

सकता हैं । प्रथम कृति 'प्रारम्भिक रचना और 'प्रेरक व्यक्तित्व' उनके प्राथमिक और उनकी कथाओं में गुरुवर वृंदो के जीवन व्यक्तित्व का सापेक्ष रेखाचिह्न संस्मरण हैं, जिसे रचनात्मक शैली द्वारा निबंध के रूप में लिखा गया हैं जिसमें गिरधारीलाल शर्राफ, रघुनाथ भट्ट, करुणेश शुक्ल, गोविन्द सिंह, राधेश्याम यादव सत्तीदीन वर्मा तथा गुरुदयाल यादव आपके छाया चित्र भी हैं । इसके अलावा कविता कहानी और उपन्यास लिखने की प्रेरणा उन्हें जहां कहीं से मिली हैं उन सभी महानुभावो, प्रकृति एवं माटी का भी सूर्यदीन यादवने ऋण चुकाने का प्रयास किया हैं । उन्होंने भूमिका में लिखा भी है कि ''दर असल में उन आदर्शो एवं महान दिव्य व्यक्तियों को अपने जीवन और साहित्य से विस्मृत एवं विलग नहीं कर पाता हूं जिन्होंने मेरी रचना-प्रक्रिया में अपना योगदान दिया हैं । उनके चित्र अनजाने अनायास ही उभर आया करते है । मैं जो कुछ मैंने उन आदर्शो के सहारे अपनी रचनाओं को एक आधार एवं एकाधिक रचनात्मक स्वरूप देने का एक आधार एवं एकाधिक रचनात्मक स्वरूप देने का प्रयास किया है ।''[१२] प्रारम्भिक रचना और प्रेरक व्यक्तित्व की भूमिका दूसरी निबंधिक एवं रचनात्मक कृति 'जहाँ देने की अपेक्षा पाया' (२००७) भी सूर्यदीन यादव के अगाध प्रगाढ अनुभवो के साहित्य-निबंध है, जिनमें रचना-शैली के विविध अनुभवो को रचनात्मक शैली मे चित्रित किया गया है । हालांकि उसके कुछ अंश उनकी कहानियों और उपन्यासों में भी आ चुके हैं। उस कृति में सूर्यदीन का जीवन-दर्शन भी मिलता हैं । प्रथम आचरण-पृष्ठ के मोड़ पर सूर्यदीन यादवने हस्त प्रति के प्रति लिखा है । यथा मेरे रचनाकार का जीवन मापा जा रहा है-कोरे कागज पर देखना है कि जीवन नहीं इस समुद्र-मंथन से अमृत के साथ क्या-क्या निकलता हैं ? यह लगता हैं कही फिर विष न निकल आये । यहां यही प्रयत्न रहा है कि इस क्षणभंगुर जीवन मंथन से मात्र अमृत ही निकले और सारा जहां अमृतमय हो जाये ।

प्रबुन्द्ध सम्पादक :

विविध साहित्यिक रचनाओं के सम्पादन-कार्य में डॉ. सूर्यदीन यादव माहिर है । सम्पादन-कार्य भी रचना-प्रक्रिया का अभिन्न हिस्सा है । प्रत्येक रचनाकार को सम्पादन करने में निपुण होना चाहिए । आज सूर्यदीन यादव दो-दो साहित्यिक पत्रिकाओं का सम्पादन-कार्य सम्भालते है । वह उत्तरप्रदेश एवं गुजरात से प्रकाशित होनेवाली साहित्य-परिवार अनिश्चितकालीन पत्रिका के प्रधान सम्पादक है । इसके पूर्व वह 'रचनाकर्म' साहित्यिक मासिक साहित्यिक पत्रिका के सह-संपादक वर्षो तक बने रहे । 'रचनाकर्म' को भारतीय स्तर का साहित्यिक हिन्दी-पत्रिकाओं में श्रेष्ठ मानी गई है । 'साहित्य-परिवार' तो उनके नये अनुभवो के अनुसार एक अद्वितीय पत्रिका बनती जा रही हैं । 'साहित्य-परिवार' के

चतुर्थाक के ''यहाँ के लोग' स्तम्भ जो सम्पादकीय होने के साथ एवं रचनात्मक यथार्थ कला निबंध भी हैं उसमे यादव जी ने लिखा है कि ''आम तौर पर सम्पादकीयता भी रचनाधर्मिता की ही एक कड़ी हैं । कड़ी यदि साहित्यिक विधाओं को जोड़ती हैं तो हो वह कड़ी मानी जाती हैं । छोटी-बड़ी जो भी उपलब्ध हो गई उन्हीं कड़ियो के बलबूते पर में यहाँ के लोगो को निकट रूप से जोड़ने का प्रयत्न करता हूं ।''[१३] अर्थात् पत्रिका के सम्पादकीय के माध्यम से भी सूर्यदीन यादव रचना-प्रक्रिया को लक्ष्य मे रखते है । उनके मत से रचना-प्रक्रिया में पत्रकारिता एवं सम्पादकीयता का विशेष योगदान होता हैं। सूर्यदीन यादव पत्रिका के अन्तः क्लेवर के संदर्भनुसार टाइटल सृजन करते हैं । पत्रिका में सभी विधाओं का समावेश करते हैं । बिना किसी के दबाव के साम्य दृष्टि से वे पत्रिका का सम्पादन करते है । उनके सम्पादन को एक और विशेषता होती है । वह परम्पराओं से हटकर नये-पुराने दोनों रचनाकारो के अग्रिमता देते हैं । पत्रिका के आगे-पीछे गतांक की बात तथा अग्रांक की बात लिखकर वह प्रकाशित हो चुके तथा प्रकाशित होनेवाले अंको से पाठको को जोड़ते है । वह पाठको के प्रश्नो के उत्तर भी रचनात्मक तरीके से देते हैं । यथा अंक-३ 'साहित्य परिवार' के प्रतिक्रिया का स्वस्थ पत्र, जो अंक-४ २००७ मे प्रकाशित हैं देखा जा सकता हैं । वे कुण्ठनाथ ने पत्र द्वारा कहा हैं कि- ''आपने सम्पादकीय में बहुत सुन्दर तथा वाजिब प्रश्न उठाया हैं और उसका उत्तर भी खूब दिया हैं ।''[१४] लेखन सरल होता हैं किन्तु प्रकाशन काफी कठिन होता हैं । सूर्यदीन यादव बचपन से ही लिखने और पुस्तके छपवाने के लिए बेहद शोकीन रहे हैं । उनका कहानी-संग्रह चित्रित नवीन कहानियां' देखने और पढ़ने से पता चलता हैं कि वह आठवी-नवी में जब पढ़ते थे तभी कविता और कहानी लिखने लगे थे । वह एक अच्छे चित्रकार भी है । जब वह किसी मुद्रण या प्रेस से अपरिचित थे तभी एक कहानी-संग्रह हाथ से लिखकर हस्त प्रत के रूप मे तैयार कर लिये थे । उस हस्त प्रति का चित्र 'चित्रित नवीन कहानियों' में देंखा जा सकता हैं । 'बात के बतंगड़ का प्रयास' उनका प्रथम उपन्यास 'प्यार का त्याग' जो बाद में 'प्रेमस्त्रोत' के नाम से २००५ से प्रकाशित हो पाया ३२ वर्ष पहले लिखा गया उपन्यास को प्रकाशित नहीं करवा सके थे । यह शोध का विषय हो सकता है । उन्होंने अपने 'बात का बतंगड' निबंध मे लिखा हैं ''उस काल्पनिक उपन्यास से कही अच्छा उपन्यास मैं लिखना चाहता था । इसलिए उस प्रथम 'प्यार का त्याग' एवं द्वितीय जासूसी उपन्यास 'गायब होती लड़किया' उपन्यास को मैंने चाहकर भी प्रकाशित नहीं करवाया । वह अच्छा हुआ । नहीं तो मैं वही का वही रह जाता । साहित्य-जगत को वह नहीं दे पाता जो आज दे पाता हूं । बस यही समझे कि इम्तियाज के साथ हुआ वह बात का बतंगड मुझे लेखन-प्रक्रिया की ओर खीच चलाया ।''[१५] हर लेखक

की दवात में भिगोकर रखा था मैं लकड़ी की कलम से बोर-बोर कर लिखे बनाये गये

की तरह सूर्यदीन यादव को भी आर्थिक अभावो का सामना करना पड़ा । प्रकाशक नये रचनाकारो की पुस्तकें कहाँ छापते हैं । सूर्यदीन यादव ने चित्रित नवीन कहानियां कृति के आवरण के प्रथम मोड़-पृष्ठ पर लिखा हैं कि आर्थिक अभाव में यह नहीं जानता था कि मेरे हाथो द्वारा भंगरहया के रस और कोयले से बनाई गई काली स्याही जिसे माटी

बचकाने हस्त-पित्त कभी मुद्रित हो पायेगे । आर्थिक प्रश्न आज भी है । किन्तु साहित्यिक उत्तरदायित्व निभाते हुए उन अनुभवों को आप तक पहुंचा पा रहा हूँ । इस प्रकार सूर्यदीन यादव की पुस्तको का मुद्रण प्रारम्भ हो गया और हर साल उनकी कोई नई कृति प्रकाशित होती है । कई पत्रिकाओं में उनकी रचनाएँ प्रकाशित होती हैं । 'इन्द्रप्रस्थ-भारती', 'राष्ट्र-वीणा', 'भाषा', 'रचनाकर्म' 'रैन-बसेरा, 'कथा-बिम्ब' आदि पत्रिकाओं में रचनाए सम्बोधक, इन्द्रप्रस्थ भारती, लोकयज्ञ, डॉ. सूर्यदीन व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में श्रीमती कांति अय्यर यादव के व्यक्तित्व और कृतित्व की अग्नि के समक्ष इस दुनिया में सारी छल, झूठ और सारहीन प्रलोभन सबके सब भस्मसार हो जाते है । आंचलिक कथा सर्जक सूर्यदीन यादव पृष्ठ ०९ प्रकाशित होती हैं । उनकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं । अहमदाबाद से उनका कहानी संग्रह 'पहली यात्रा' पार्श्व प्रकाशन से प्रकाशित हुआ । दिल्ली से भावना प्रकाशन ने सूर्यदीन को चार पुस्तके प्रकाशित हैं। उनके खुद के प्रकाशन-सरिता प्रकाशन से भी उनके कई काव्य-संग्रह प्रकाशित हुए हैं । दिल्ली से उनके चार समीक्षा-ग्रन्थ प्रकाशित हुए है । चार कहानी-संग्रह भी प्रकाशित हो चुके हैं । कुल मिलाकर २६ कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं । अभी कई पुस्तके प्रकाशनाधीन हैं। लेखन के साथ सूर्यदीन की कृतियो का प्रकाशन उनके लेखनकार्य में आवेग लाता है।

सम्मानित साहित्यकार :

सूर्यदीन यादव साहित्य-जगत में चर्चास्पद होने के साथ बहुत ही लोकप्रिय रचनाकार माने जाते हैं । उनकी रचनाओं एवं कृतियो के लिए उन्हें पंद्रह बार जानी-मानी संस्थाओ द्वारा सम्मानित एवं पुरस्कृत किया गया हैं । 'पहली यात्रा, कहानी-संग्रह की प्रतियाँ मिली। कहानियां लगभग पढ़ गया । 'ऊसर जमीन' कहानी काफी अच्छी लगी । उसकी प्रतीकात्मकता प्रभावित करती है । कहानियों में जानी पहचानी स्थितियों और समस्याएं उठाई गई हैं, और ठीक है । अमानवीय असुन्दरता के विरुद्ध मानवीय मूल्यो का स्वर मुखर किया गया हैं, यह आपकी शक्ति हैं ।''[१५] तेजतर्रार लेखक एवं बेबाक समीक्षक श्री महेश कतोर ने सूर्यदीन यादव की कहानियों के संदर्भ में लिखा हैं-

प्रिय भाई,

आपका कथा-संग्रह 'वह रात' मैंने पढ़ लिया । यह संग्रह वह रात आपके पूर्व-कहानी-संग्रह पहली यात्रा से अधिक सुगठित है ।

पुरस्कार सम्मान :

गुजरात-(१) डॉ. सूर्यदीन यादवजी को हिन्दी साहित्य परिषद द्वारा 'माँ का आँचल' उपन्यास को तारीख १९-९-१९९३ में शिवमंगल सिंह 'सुमन' के वरद हस्तों से सम्मानित व पुरस्कृत किया गया ।

(२) हिन्दी साहित्य परिषद अहमदाबाद द्वारा आयोजित काव्य प्रतियोगिता में 'दूसरी आँख' कविता पुरस्कृत गुजरात राज्यपाल श्री कृष्णपालसिंह द्वारा सम्मानित १९९७ में ।

(३) हरियाना-जैमिनी साहित्य एकादमी पानीपत द्वारा मानद् पदवी 'आचार्य' से प्रमाणपत्र द्वारा तारीख १४-९-१९९७ में सम्मानित ।

गुजरात-(४) हिन्दी साहित्य एकादमी गाँधीनगर द्वारा वह रात कहानी संग्रह पुरस्कृत १९९८ में प्रमाणपत्र व धन राशि द्वारा सम्मानित ।

(५) हिन्दी साहित्य परिषद अहमदाबाद द्वारा आयोजित अन्य प्रतियोगिता में 'दूसरी आँख' कविता पुरस्कृत डॉ. रामेश्वर शुक्ल 'अँचल' द्वारा सम्मानित १९९५ में ।

(६) हिन्दी साहित्य एकादमी गाँधीनगर (गुजरात) द्वारा चित्रित नवीन कहानियाँ (बाल कथा) पुरस्कृत १९९९ में प्रमाणपत्र व धन राशि से सम्मानित मध्यप्रदेश ।

(७) मध्यप्रदेश लेखक मंच बैतूल द्वारा काव्य कुल भूषण की उपाधि या प्रमाण पत्र देकर १६ मार्च २००१ को सम्मानित हैदराबाद ।

(८) आचार्य जितेन्द्र कविता महाविद्यालय एवं शोध संस्थान हैदराबाद द्वारा प्रमाणपत्र देकर २००३ में सम्मानित किया गया ।

उत्तरप्रदेश-(९) विश्व अवधी संस्थान, विक्रमपुर सुलतानपुर (उ.प्र.) द्वारा सूर्यदीन यादव के 'अवधी सेवक' प्रमाणपत्र देकर २००३ में सम्मानित किया गया ।

(१०) उच्च माध्यमिक विद्यालय अध्यापक मंडल गुजरात द्वारा डॉ. सूर्यदीन यादव की उनके लेखन एवं विशिष्ट पुस्तक प्रकाशन सिद्धि हेतु स्मृति चिन्ह देकर तारीख ५-७-२००४ में सम्मानित किया गया ।

उ.प्र.-(११) विश्व शांति सदभाव संस्थान वाराणसी द्वारा ता. ०१-१०-२००४ को हिन्दी साहित्य, पत्रकारिता की अमूल्य सेवा के लिए डॉ. सूर्यदीन यादव को 'हिन्दी रत्न अलंकरण' से सम्मानित किया गया ।

म.प्र.-(१२) साहित्यिक संस्था 'कादम्बरी' जबलपुर (म.प्र.) द्वारा डॉ. सूर्यदीन यादव को 'ममता' उपन्यास के लिए २७-१-२००४ को डॉ. रानाकर पाण्डेय से वरद् हस्तों द्वारा सम्मानित व पुसस्कृत किया गया ।

उ.प्र.-(१३) अखिल भारतीय हिन्दी सेवा संस्थान इलाहाबाद द्वारा डॉ. सूर्यदीन यादव को 'साहित्य शिरोमणि' को मानद् उपाधि से ता. ०५-२-२००४ को अलंकृत एवं सम्मानित किया गया ।

महाराष्ट्र-(१४) जागृति प्रकाशन मुम्बई द्वारा डॉ. सूर्यदीन यादव को विशिष्ट योगदान देने के उपलक्ष्य में 'पूर्व पश्चिम गौरव सम्मान' से दिनाँक २२-१२-२००५ को विभूषित किया गया।

(१५) भारतीय वाड़मय पीठ कोलकाता द्वारा डॉ. सूर्यदीन यादव को उनकी साहित्यिक निष्ठा, समर्पण एवं पारस्परिक सौहार्द के उपलक्ष्य में ता. १५-५-०५ को 'सारस्वत साहित्य सम्मान देकर अलंकृत किया गया ।

(१६) अखिल भारतीय साहित्य कला परिषद द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मानोपाधि महाविद्यालय कुशीनगर (यू.पी) द्वारा सूर्यदीन यादव को ता.२२-०१-०६ को 'राष्ट्रभाषा विद्यालंकार' की उपाधि से अलंकृत किया गया ।

(१७) इन्द्र धनुष साहित्यिक कला संस्था बिजनौर द्वारा ता. १५-०८-०७ को काव्य मर्मज्ञ सम्मान से डॉ. सूर्यदीन यादव को सम्मानित किया गया ।

डॉ. सूर्यदीन यादव एक ऐसा गरिमायुक्त नाम हैं जिसने जीवन संग्राम के मैदान में सूर्य की तरह रोशनी देता हुआ अपने ओजस व्यक्तित्व को सुरक्षित रखा हैं । समाज और भाषा के प्रति सम्मोहन पैदा करनेवाला यह व्यक्ति विविध आयामों में कार्यरत रहकर अपनी प्रतिभा तथा गम्भीर वैचारिक प्रज्ञा को स्थापित करता रहता है ।

शैक्षणिक अध्ययन के उपरान्त स्वाध्ययन अधिक गम्भीर गति से अग्रसर हुआ है। साहित्य, संस्कृति, शिक्षा और राजनीति इनकी प्रकृति में रचपच गए हैं । साहित्यकारो से भेंट, उनका सम्मान नड़ियाद में कवि सम्मेलनों का आयोजन, साहित्यिक चर्चा जैसे आयोजन भी उनके द्वारा आयोजित किए जाते हैं । शिक्षा के प्रति इनका समर्पण उत्साह जगाता हैं।

'साहित्य परिवार' मासिक पत्रिका का सितम्बर २००६ में प्रथम अंक निकला । उससे पहले आनंद से निकलनेवाली मासिक-पत्रिका 'रचनाकर्म' के सह सम्पादक थे ।

समस्त भारत विशेषकर अहिन्दी भाषी प्रदेश में हिन्दी की सेवा प्रचार-प्रसार करने के लिए अपनी सारी जमा पूँजी लगाकर और अपने पूरे परिवार को सहयोग विशेषकर दोनों पुत्रो का सहयोग लेकर 'साहित्य-परिवार' के प्रकाशन में पूरी तन्मयता से जुड़ गये ।

श्रीमती कान्ति अय्यर उनके बारे में लिखती है कि ''बहुआयामी अनुभव ही मेरे दृष्टिकोण से अंग बन रचना सृजन करते हैं । परम्पराओं की तह को तोड़ती हुई । नई रचनाशीलता मेरे निजी दृष्टिकोण का प्रतिफल हैं ।''[१६]

बहुआयामी सर्जक सूर्यदीन यादव के साहित्य के बारे में ईश्वर सिंह चौहान लिखते हैं कि ''डॉ. सूर्यदीन यादव की शब्द-साधना अनूठी हैं वे अपनी सर्जानात्मक ऊर्जा को निरन्तर बनाये रखते है-उसका प्रमाण उनका विपुल साहित्य हैं ।''[१७]

यादव जी ने जो भोगा वह उस लेखक को भोगना होता है । जो अपना रास्ता अपने आप बनाता है । हम कितनी भी लम्बी-लम्बी और किताबी बातें करें कि जो जमीन से उठता हैं उसी लेखक के पास जिन्दगी की असली तस्वीर होती है । लेकिन हमारा सामंतवादी मन भले ही कितना गरीब और दलित का दोस्त हो, कोई न कोई बहाना ढूँढकर जमीन से जुड़े लेखक को ही सबसे पहले केकडे की तरह नीचे खींचने को आतुर है । वे स्वयं लिखते हैं-

''बहुआयामी अनुभव ही मेरे दृष्टिकोण के अंग बन रचना सृजन करते हैं । परम्पराओं की तह को तोड़ती हुई । नई रचनाशीलता मेरे निजी दृष्टिकोण का प्रतिफल है ।''[१८]

यादव जी का कृतित्व :

यादव जी हिन्दी कथा-साहित्य के क्षेत्र में अपना अलग स्थान रखते है । समकालीन कहानीकारों में वे अपने मौलिक विद्रोही व जीवन्त कथानकों मनोवैज्ञानिक किन्तु वास्तविक चरित्रांकन अन्तः पर्यवेक्षी दृष्टि के कारण विशेष स्थान के अधिकारी हैं । यादव जी का साहित्य सृजन का संसार कितना बहुआयामी है । देखकर पढ़कर आश्चर्य होता है । कहानी उपन्यास, बाल साहित्य, संस्मरण, लोककथा और निबन्ध आदि के क्षेत्र में उन्होंने परिणाम और गुणवत्ता दोनों दृष्टियों से उल्लेखनीय सृजन किया है । लेखक से अभिप्राय लेखकीय ईमानदारी जुझारुपन और मूल्यों के लिए समर्पण से है जिसे उन्होंने जीवन के अंत तक शिद्दत से पकड़े रखा ।

हिन्दी के आधुनिक कथाकारो में यादव जी का अपना विशिष्ट स्थान हैं । उनके उपन्यास तथ कहानियों में विषय, अभिव्यक्ति तथा शैली के स्तर पर पाठकों को झकझोरा है और उनकी सराहना प्राप्त की है । बहुत सामान्य स्थिति में जन्म लेकर भी उन्होंने लेखन कार्य किया ।

यादव जी आज कल के सफल (आंचलिक उपन्यासकार) माने जाते है । यादव जी की आंचलिकता में विविधता है । एक और तो गाँव के पिछड़े क्षेत्र के निम्न वर्ग को समाज से उसने अपने लिए सामग्री ग्रहण की है । दूसरो और गाँव शहर के पिछड़े क्षेत्रो के दलित, पतित और हीन जीवन से ममता, 'अंधेरा जहाँ उजाला' आदि में गाँव के निम्न वर्ग के चित्र ।

जीवन की मिट्टी के इन्हीं अनुभवो को पचाकर यादव जी के भीतर का बसा लेखक मजबूत बना है । और जीवन की सच्ची तस्वीरे उकेर सका है । आश्चर्य होता है कि उनकी लेखनी अनवरत सृजन यज्ञ में जुटी रही । जीवन की कटुतम परिस्थितियां भी उसकी स्याही नहीं सुखा पायी । तभी तो उनके लेखन का विपुल और वैविध्यभरा विस्तार देखकर श्रद्धानत होना पड़ता है । उपन्यास कहानी, निबन्ध, लोककथा, बाल साहित्य एवं कविता सभी विधाओं में उनका लेखन है ।

यादव जी का कहानी-संग्रह

क्रम	कृति का नाम	प्रकाशन वर्ष	प्रकाशक
(१)	चित्रित नवीन कहानियाँ-	१९६९	छात्र प्रकाशन, ग्रा.पूरे गंगाराम सुलतानपुर पो.-राजूपुर सुल्तानपुर
(२)	पहली यात्रा	१९९१	पार्श्व प्रकाशन, झवेरी वाड, अहमदाबाद
(३)	वह रात	१९९८	शांति पुस्तक मन्दिर, K/71 कृष्णनगर, नई दिल्ली.
(४)	दूसरा सफर	२००५	मित्तल सन्स दिल्ली ११००९२

उपन्यास

(१)	दूसरा आँचल	११९१	विद्यार्थी प्रकाशन, K/71लालकिला, कृष्णनगर नई दिल्ली ५१
(२)	माँ का आँचल	१९९२	शांति पुस्तक मंदिर K/71 लालकिला, कृष्णनगर नई दिल्ली ५१
(३)	ममता	२००२	भावना प्रकाशन A/26 दिल्ली
(४)	अंधेरा जहाँ उजाला	२००३	भावना प्रकाशन A/26 दिल्ली
(५)	चौराहे के लोग	२००४	पश्चिमांचल प्रकाशन, अहमदाबाद

(६) प्रेम स्त्रोत	२००६	छात्र प्रकाशन ग्रामपूरे गंगाराम पो.राजापुर सुल्तानपुर
(७) जमीन	२००६	सरिता प्रकाशन, ३ पुनीत कोलोनी, नडियाद
(८) एक सफर के मुसाफिर	२००९	c/o भावना प्रकाशन दिल्ली

कविता संग्रह

(१) हिन्दीवाहिनी	१९७७	सरिता प्रकाशन ३ पुनीत कोलोनी नडियाद
(२) फागुन बीते जा रहे	१९९३	सरिता प्रकाशन ३ पुनीत कोलोनी नडियाद
(३) दूसरी आँख	१९९४	सरिता प्रकाशन ३ पुनीत कोलोनी नडियाद
(४) लगे मेरा गाँव	२००१	सरिता प्रकाशन ३ पुनीत कोलोनी नडियाद
(५) बूँदे	२००४	छात्र प्रकाशन ग्रामपूरे गंगाराम सुल्तानपुर
(६) उछलती हुई लहरें	२००५	छात्र प्रकाशन ग्रामपूरे गंगाराम सुल्तानपुर
(७) प्रेरणा	२००६	छात्र प्रकाशन ग्रामपूरे गंगारम सुल्तानपुर
(८) हम खून लालरंग के	२००८	छात्र प्रकाशन ग्रामपूरे गंगाराम सुल्तानपुर

संस्मरण :

संस्मरण जीवन से सम्बन्धित कुछ असम्बद्ध-घटनाओं का लेखा होता है, इसे अधिकाशतः चरित्रनायक स्वयं लिखता है । जीवन में समय-समय पर जो बातें अथवा घटनाएँ घटी हो, उनका अलग-अलग वर्णन संस्मरण कहा जाता है । इसमें आत्म-चित्रण की एकता नहीं होती और न ही व्यक्तित्व का कोई चित्र उपस्थित हो सकता है । इसमें चरित्रनायक की कुछ मुख्य-मुख्य और प्रसिद्ध बातें जानी जा सकती हैं, उसके स्वभाव आदि के विषय में पूर्ण रूप से नही जाना जा सकता । किसी का संस्मरण जीवन चरित्र-लेखक के सामग्री का काम अवश्य दे सकता है, क्योंकि यह जीवन की कुछ घटनाओं का एतिहासिक उल्लेख मात्र है । वस्तुतः संस्मरण भी जीवनी का दूसरा रूप है । जिस प्रकार आत्मकथा में जीवनी का आद्योपान्त सुसम्बद्ध विवरण प्रस्तुत किया गया है परन्तु 'संस्मरण' सम्पूर्ण जीवन के कुछ विशिष्ट अंशो का उल्लेख रहता है । तत्वों की दृष्टि से यह जीवनी-साहित्य के अनुरूप होता है । और शैली की दृष्टि से यह आत्मकथा के समीप होता है । प्रो. मोहन वल्लभ पन्त के अनुसार-

"जिस प्रकार उपन्यास जीवन की सम्रगता का चित्र खींचता है । और कहानी उसी जीवन के एक छोटे से अंग का, उसी प्रकार जीवनी तो नायक के समस्त जीवन को

अपने छोरो में बांधती चलती है और संस्मरण उसके जीवन की एक झाँकी को चित्रित करता है ।''[१९]

बाबू गुलाबराय के अनुसार :

''संस्मरण भी रेखाचित्र की भाँति व्यक्ति से संबन्धित होते है । जहाँ रेखाचित्र वर्णनात्मक अधिक होते है । संस्मरण विवरणात्मक अधिक होते हैं । संस्मरण जीवनी साहित्य के अर्न्तगत आते है । वे प्राय: घटनात्मक होते हैं किन्तु वे घटनाएँ सत्य होती हैं । और साथ ही चरित्र की परिचायक भी ।''[२०]

संस्मरण

क्रम	कृति का नाम	प्रकाशन वर्ष	प्रकाशक
(१)	प्रारम्भिक रचना और प्रेरक व्यक्तित्व	२०००	सरिता प्रकाशन
(२)	जहाँ देने की अपेक्षा पाया	२००७	सरिता प्रकाशन

समीक्षा

(१)	कथाकार रामदरश मिश्र	1987	इन्द्र प्रस्थ प्रकाशन दिल्ली
(२)	सुदर्शन मजीठिया का औपन्यासिक शिल्प	१९९९	भावना प्रकाशन दिल्ली
(३)	राम दरश मिश्र की कविता-सृजन के रंग	२००६	शांति पुस्तक भण्डार दिल्ली
(४)	रोजमर्रा की जिन्दगी बनाम के अंग आज की कविता	२००६	भावना प्रकाशन दिल्ली

साहित्य-परिवार	पत्रिकाएँ	प्रकाशन
प्रथम अंक	6 जून 2006	सरिता प्रकाशन गाजियाद
द्वितीय अंक	२१, अक्टूम्बर सन् २००६	सरिता प्रकाशन
तृतीय अंक	६, जून सन् २००७	सरिता प्रकाशन

उपरोक्त रूपरेखा यादव जी के बहु आयामी और इन्द्रधनुषी कृतित्व का परिचायक है । उनके लेखन में जीवन का सादृश्य और यथार्थ चित्रण पाया जाता है । आधुनिक

नगर चेतना का बोध, स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों की जटिलता, सामान्य जीवन का चित्रण नेताओं की सत्ता लोलुपत्ता और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण आदि का बखूबी चित्रण हुआ है।

आलोचना शास्त्र- पृष्ठ-१७२

काव्य के रूप छट्ठा संस्करण पृष्ठ-२४१

यादव जी के साहित्य और उससे भी अधिक उनके जीवन जीने की प्रक्रिया ऐसा अहसास होता है कि हम किसी सामान्य व्यक्ति अथवा किसी लेखक के साथ न होकर, रचनाशील जीवन व्यक्तित्व के साथ हो-जो तमाम स्वीकृत परम्पराओं से अलग किन्ही पृथक जीवन तन्तुओं से जुड़ा हुआ है। और वे जीवन तंतु निश्चय ही रचनात्मकता की एक बिल्कुल मजबूत धुरी से बँधे हुए है। इस रूप में यादव जी एक सांसारिक व्यक्ति और लेखन तथा वर्तमान लेखकीय परिवेश की स्वीकृत धारा में न समा सकने वाले स्वतंत्र लेखक हैं। और इस स्थिति का उन्हें अहसास भी है, साथ ही उसके अच्छे और बुरे पात्रों को उन्होंने स्वीकार भी किया है।

संदर्भ सूचि

क्रम	कृति का नाम	पृष्ठ
(१)	प्रारम्भिक रचना और प्रेरक व्यक्तित्व डॉ. सूर्यदीन यादव	०५९
(२)	लोकजीवन के कवि सूर्यदीन यादव	०४९
(३)	जहाँ देने की अपेक्षा पाया संपादक डॉ. सूर्यदीन यादव	००६
(४)	आंचलिक कथासर्जक सूर्यदीन यादव	००९
(५)	प्रारम्भिक रचना और प्रेरक व्यक्तित्व	००९
(६)	पहलीयात्रा डॉ. सूर्यदीन यादव	०७८
(७)	आंचलिक कथा सर्जक सूर्यदीन यादव	०२०
(८)	सुदर्शन मजीठिया की औपन्यासिक शिल्प डॉ. सूर्यदीन यादव भूमिका से	
(९)	आँचलिक कथा-सर्जक : सूर्यदीन यादव संपादक श्रीमती कांति अय्यर	००९
(१०)	आंचलिक कथा सर्जक सूर्यदीन यादव श्रीमती कांति अय्यर	१०२
(११)	आंचलिक कथा सर्जक सूर्यदीन यादवजी श्रीमती कांति अय्यर	००९
(१२)	प्रारम्भिक रचना और प्रेरक व्यक्तित्व की भूमिका से	
(१३)	साहित्य पत्रिकाएँ अंक ४ २००७ पृष्ठ	००३
(१४)	साहित्य पत्रिकाएँ अंक ४ २००७ पृष्ठ	००६
(१५)	जहाँ देने से अपेक्षा पाया डॉ. सूर्यदीन यादव	०७८
(१६)	आंचलिक कथा सर्जक सूर्यदीन यादव	१०३
(१७)	साहित्य परिवार पत्रिका अंक-२	०६२
(१८)	आंचलिक कथा सर्जक सूर्यदीन यादव	१०३
(१९)	आलोचना शास्त्र	१७२
(२०)	काव्य के रुप छट्ठा संस्करण	२४१

• • •